ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १९ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अक्टूबर (प्रथम) २०१४

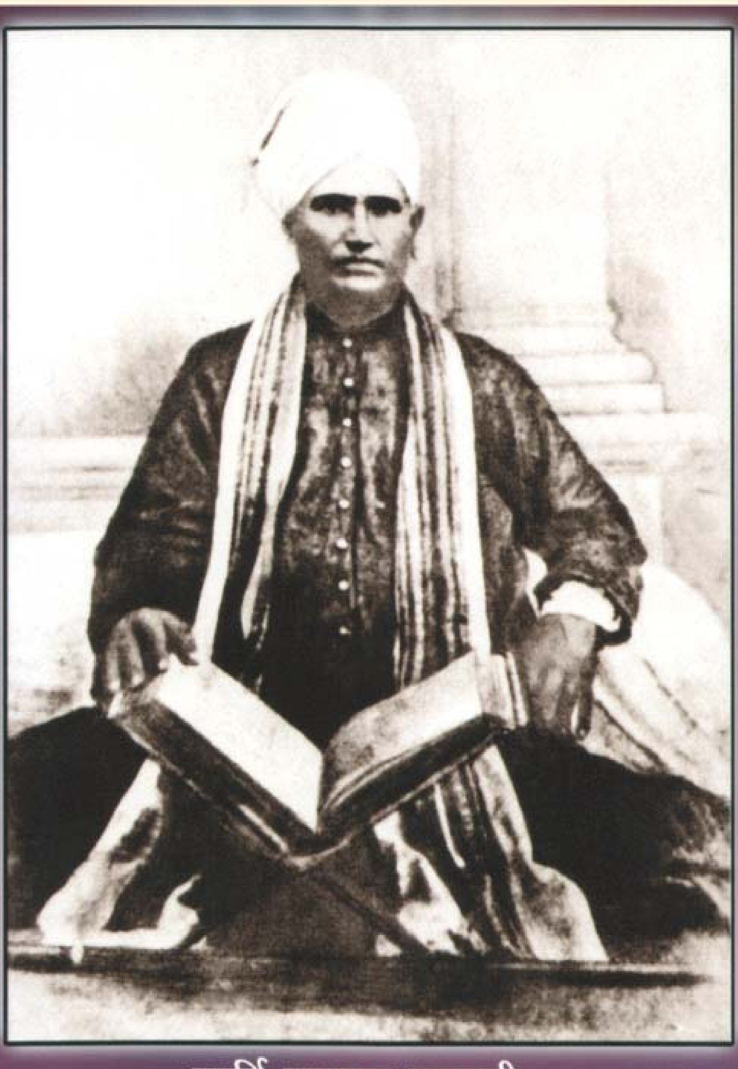

महर्षि दयानन्द सरस्वती

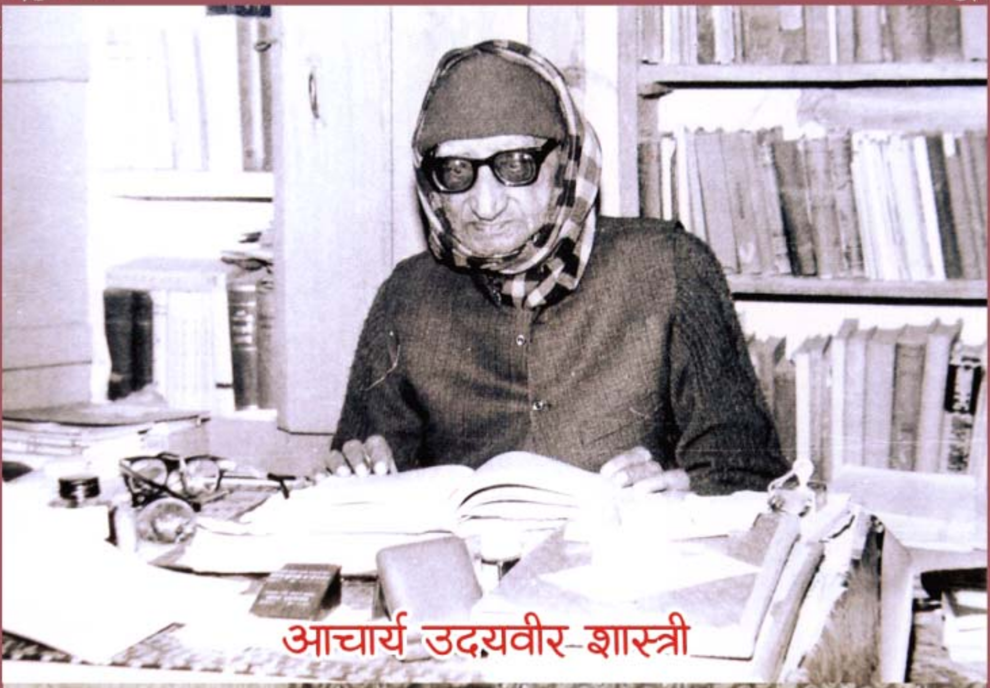

आचार्य उदयवीर शास्त्री

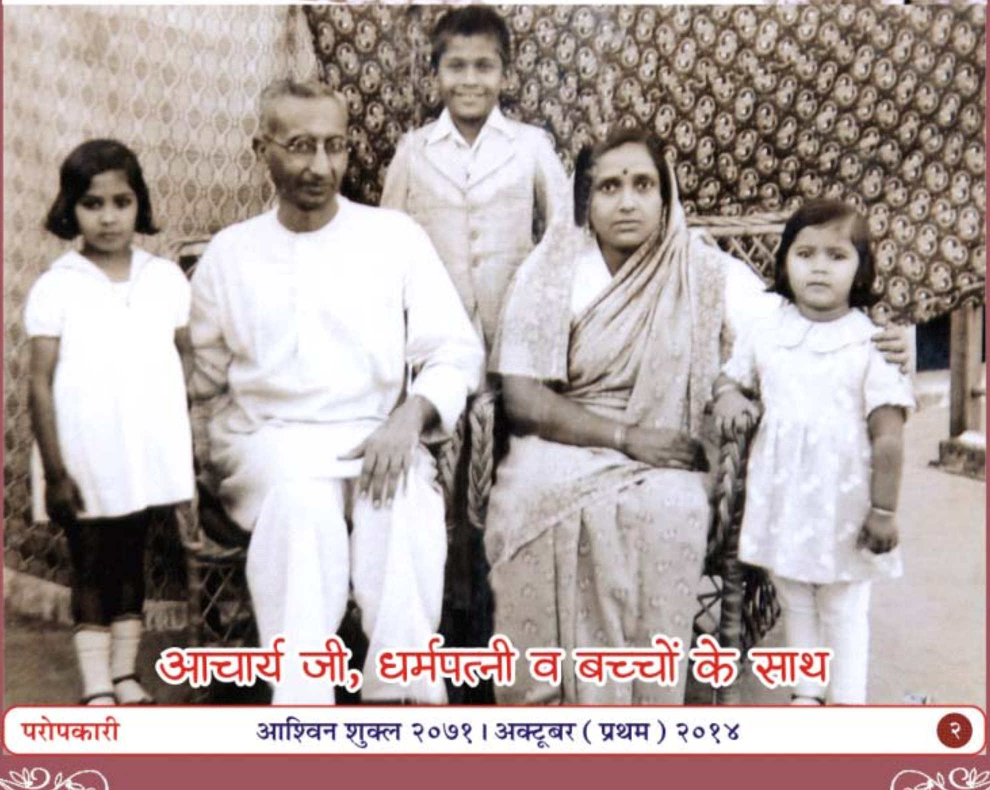

आचार्य जी, धर्मपत्नी व बच्चों के साथ

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ **अंक** : १९
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: आश्विन शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अक्टूबर प्रथम २०१४

अनुक्रम

१. मोदी जो उत्तराखण्ड में नहीं कर.....	सम्पादकीय	०४
२. इन्द्रस्य युज्य: सखा	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. आर्य समाज का प्रथम नियम	प्रो. वीरेन्द्र कुमार	१९
५. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२३
६. तुम हिन्दू हो या आर्य?	राजेन्द्र जिज्ञासु	२६
७. जिज्ञासा समाधान-७२	आचार्य सोमदेव	३०
८. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	३३
९. प. शिवकर बापूजी तलपदे	विजय प्रसाद	३५
१०. संस्था-समाचार		३८
११. आर्यजगत् के समाचार		४१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

मोदी जो उत्तराखण्ड में नहीं कर सके जम्मू-कश्मीर में कर दिखाया

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में आपदायें आती रही हैं। कभी ये मनुष्य के द्वारा किये गये कार्यों से तो कभी प्रकृति के प्रकोप से। भारत भी इन आपदाओं का अपवाद नहीं है। पहले इतिहास में पढ़ते-सुनते थे, बंगाल का अकाल तो कभी क्वेटा का भूकम्प। स्वतन्त्र भारत में भी गुजरात के भूकम्प को हम सब ने देखा और अनुभव किया है। ऐसे संकट के समय मनुष्य कैसी प्रतिक्रिया करता है यही उसके मानवीय विकास के मानदण्ड को बताता है। अंग्रेजों के समय हम शासन से अपने उद्धार की अपेक्षा वैसी नहीं कर सकते थे जैसी आज हम अपनी सरकार और अपने प्रशासन से रखते हैं। पुराने समय में भी समाज के स्वयं-सेवी संगठन सहायता, बचाव एवं सेवा सम्बन्धी कार्य करते थे, आज भी करते हैं, परन्तु इन लोगों की क्षमता और जानकारी बहुत सीमित होती है। ये दूसरों के मार्गदर्शन में कार्य कर सकते हैं स्वतन्त्र रूप से नहीं। स्वतन्त्रता के बाद हमें सरकार से आशा थी कि वह ऐसे अवसरों पर राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय भावना से विपत्तिग्रस्त लोगों की सहायता करे, परन्तु पिछली सरकारों का दृष्टिकोण इस विषय में बड़ा ही संकीर्ण सिद्ध हुआ। आज सरकार बदलने का सबसे बड़ा प्रमाण हमारे सामने है, सरकार की सोच का बदलना।

जब पिछले वर्ष उत्तराखण्ड में बाढ़ आई थी उस समय सहायता कार्य इतनी धीमी गति से और उदासीनता के साथ हुए थे, जिसका परिणाम उस बाढ़ में सरकारी आंकड़े ६ हजार लोगों के मरने के हैं, स्थानीय लोगों का अनुमान है कि यह आंकड़ा दस हजार से भी अधिक था। आज तक भी खोए हुए लोगों का अनुमान सरकार नहीं लगा सकी है। उस समय गुजरात के मुख्यमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के सारे यात्रियों को स्वयं के वायुयान से सकुशल घर पहुँचाया था। मोदी बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का दौरा करने हेलीकॉप्टर से जाना चाहते थे, उनके हेलीकॉप्टर को उतरने की अनुमति नहीं दी गई। वे बाढ़ग्रस्त लोगों को अपनी सरकार के प्रयत्नों से बचाने के लिए तत्पर थे परन्तु उन्हें अछूत समझकर अनसुना कर दिया गया। जब मोदी ने सात सौ करोड़ व्यय करके केदारनाथ मन्दिर के पुनर्निर्माण का प्रस्ताव रखा तो ठुकरा दिया गया। समय का भी क्या फेर है, आज कश्मीर में वही मोदी देवदूत बनकर उतरे हैं। जो सरकार मोदी को अपना शत्रु मानती थी आज मोदी के कार्यों की प्रशंसा करती है। जो लोग समझते थे कि जैसे ही मोदी प्रधानमन्त्री बनेंगे ईसाई और मुसलमानों का संहार प्रारम्भ हो जायेगा। दूरदर्शन के एक प्रसारण में एक लड़की ने आशंका व्यक्त की थी कि मोदी प्रधानमन्त्री बन गये तो मस्जिद और गिरजाघर गिराये जायेंगे, सम्भवतः ऐसे लोगों के मन का भय अवश्य निकल गया होगा। जो लोग गोधरा और उत्तराखण्ड में मरने वालों को हिन्दू समझकर उपेक्षित कर चुके थे उन्हें अवश्य अनुभव हो रहा होगा, शासन में प्रजा का कोई शत्रु नहीं होता। शत्रु तो प्रजा को कष्ट देने वाला और राज्य से द्रोह करने वाला होता है।

सरकार और समाज को आपत्ति के समय लोगों के कष्ट का निवारण करना चाहिए। जो लोग ऐसे अवसर पर शर्तों के साथ सेवा करते हैं वे सेवक नहीं व्यापारी हैं, यहाँ भी व्यापार करना चाहते हैं। पिछले समुद्री तूफान में, दक्षिण में सेवा करने वालों में पीड़ितों के साथ अपने-पराये का भेद देखने में आया था। एक बार एक पादरी मित्र ने कहा- भारत में हम पिछले चार सौ वर्षों से सेवा कार्य कर रहे हैं परन्तु अभी तक यहाँ की जनता में हमारे प्रति विश्वास उत्पन्न नहीं हुआ। इस प्रश्न के उत्तर में यही निवेदन किया था- जब सेवा करते हुए हमसे बदले में कुछ माँगते हैं तो वह हमारा कार्य सेवा की श्रेणी में नहीं आता। आप सेवा नहीं करते, आप जिसकी सहायता करते हैं उससे उसका धर्म माँगते हैं, उसका धर्म परिवर्तन कराते हैं, तब आप उसकी सहायता करते हैं, यह सेवा नहीं सौदा है। सौदा पैसे में हो या विचारों में, है तो सौदा। अतः विपत्ति के समय जब कोई व्यक्ति किसी भी तरह से लाभ उठाना या उठाने का यत्न करता है वह मनुष्यता से भी गिर जाता है।

श्रीनगर की जनता में रोष है, उसकी सहायता जो प्रान्तीय सरकार के माध्यम से भेजी जा रही है, उसे कुछ लोग बीच में खा जाते हैं अतः सहायता करने वालों को यह भी ध्यान रखना होगा कि सहायता दुष्टों और आतंकियों

के हाथ न पड़े। कश्मीर की घटना को भारत सरकार ने जिस तत्परता से लिया और समाधान जिस तीव्र गति से किया, उसी का यह परिणाम है कि बाढ़ से मरने वालों की संख्या तीन सौ से अधिक मानी गई जबकि उत्तराखण्ड में ६ हजार लोगों के मरने का समाचार है। प्रधानमन्त्री ने जैसे ही बाढ़ का हवाई सर्वेक्षण किया तत्काल सरकार के साथ मन्त्रणा की, आपदा को राष्ट्रीय आपदा घोषित किया। एक हजार करोड़ सहायता राशि की तत्काल घोषणा की। सेना के तीनों अंगों के जवान बचाव कार्य में लग गये। जहाँ सेना ने लोगों का बचाव किया वहाँ उनके लिए आश्रय स्थल भी बनाये, भोजन सामग्री का भी वितरण किया। जहाँ पानी के कारण पहुँचना सम्भव नहीं था वहाँ हेलीकॉप्टर से भोजन सामग्री गिराई। आज लाखों लोगों को विपत्ति से निकाल कर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया है, यह पक्षपात रहित कर्त्तव्य पालन का उदाहरण है।

आज इस कार्य का परिणाम है कि जो लोग भारतीय सेना पर पत्थर फेंकते थे, सैनिकों को भारतीय कुत्ते कहकर तिरस्कृत करते थे, सैंकड़ों मानवाधिकारवादी संगठन विदेशों से पैसा लेकर सेना पर मानव अधिकार के उल्लंघन के आरोप विदेशी मंचों पर चिल्ला-चिल्लाकर लगाते थे, आज वे मुख दिखाने योग्य नहीं बचे हैं। सेना के जवान अपने जीवन को संकट में डालकर घाटी के लोगों का जीवन बचाने में लगे हैं। किसी ने सहायता के लिए पुकारने वाले से नहीं पूछा तू हिन्दू है या मुसलमान, सेना के लिए यह गौरवपूर्ण कार्य है। भारतीय सेना जब भी, जहाँ कहीं भी गई है उसने प्रशंसनीय कार्य किये हैं। वह युद्ध में शूरवीरता की पर्याय है तो प्राकृतिक आपदा और संकटग्रस्त मानवता के लिए शान्तिदूत है। इसलिए विश्वभर में शान्ति स्थापित करने के लिए भारत के सैनिकों को शान्ति सेना के रूप में भेजा जाता है। आज इस देश में कुछ एक है तो वह है भारत की सेना जिसके कारण यह देश एक और अखण्ड है। सेना में कोई ऊँच-नीच नहीं, इसमें हिन्दू-मुसलमान नहीं, इसमें सवर्ण-असवर्ण नहीं, इसमें अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक का झगड़ा नहीं। हमारे राजनेताओं को भी समझ लेना चाहिए कि देश और समाज को बांटने से देश को एक और अखण्ड नहीं रखा जा सकता। जो लोग समाज की भांति सेना में, पुलिस में अल्पसंख्यकवाद फैलाना चाहते हैं वे देश के शत्रु हैं। यह देश सब देशवासियों का है। यही उदाहरण आज कश्मीर के रूप में हमारे सामने हैं। इस देश में विपत्ति चाहे पूर्व में हो या पश्चिम में, दक्षिण में हो या उत्तर में, विपत्ति देश पर है यह सोचकर प्रतिकार किया जायेगा तब इस देश की एकता और अखण्डता को कोई चुनौती नहीं दे सकता।

बाढ़ का संकट तो कुछ दिनों में कम हो जायेगा तब वास्तविक संकट प्रारम्भ होगा। एक ध्वस्त कश्मीर के पुनर्निर्माण का। भूकम्प से ध्वस्त गुजरात का, जिस तेजी से पुनर्निर्माण हुआ उसी प्रकार कश्मीर का भी होना चाहिए और होगा। गुजरात में सूरत के लोग मोदी के बहुत प्रशंसक हैं क्योंकि जब पूरा सूरत बाढ़ में डूब गया था, सूरत के भवनों की पहली मंजिल पानी में डूब चुकी थीं तब मोदी अपनी पूरी सरकार के साथ सूरत में तब तक रहे जब तक सूरत को पूरी तरह बाढ़ से मुक्त नहीं कर दिया तो आज कश्मीर भी बाढ़ से मुक्त होगा इसमें कोई सन्देह नहीं है। इस बाढ़ ने जहाँ हमें कश्मीर के लोगों से निकटता बढ़ाने, दु:ख बांटने का अवसर दिया है वहीं पर ये सब प्राकृतिक आपदायें हमें सचेत होने का सन्देश देती हैं परन्तु मनुष्य उन प्राकृतिक सन्देशों को अनसुना करके अपने स्वार्थ की पूर्त्ति में लगा रहता है और बार-बार संकटों में फंसता है। उत्तराखण्ड है, कश्मीर है, पूना, मुम्बई, गुजरात कहीं भी यदि मनुष्य ने प्रकृति से इतनी क्रूरता न की होती तो संकट इतना भयावह नहीं होता। आज वैज्ञानिकों ने इन संकटों का कारण खोज निकाला है और हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है परन्तु हमारा उसपर ध्यान ही नहीं जाता। वैज्ञानिक कहते हैं कि पहाड़ों पर पहले वर्षा नहीं होती थी हिमपात होता था। बर्फ गिरने पर वह जमा होकर गर्मियों में धूप से पिघलकर सूखे के समय लोगों को नदियों से भरपूर पानी मिलता था। आज पहाड़ों पर जनसंख्या के बढ़ने से, उद्योगों के लगने से वहाँ का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है, तापमान बढ़ने से हिमपात होने के स्थान पर भारी वर्षा हो रही है। बादल फटने की घटना पहले कभी-कभी सुनने में आती थी परन्तु पर्यावरण के बदलने से प्रतिवर्ष हिमालय क्षेत्र में बादल फटने की घटनायें हो रही हैं। इसके साथ ही पानी के लिए कहा जाता है कि आप पानी को कितना भी रोकें पानी अपना रास्ता निकाल ही लेता है, वही बात आज सार्थक हो रही है। लोगों ने अन्य स्थानों की भांति कश्मीर में भी अपने मकान बनाते समय इस बात की चिन्ता नहीं की कि यह नाला है, नदी के प्रवाह की भूमि है। नदी के किनारों को काट कर आप मकान, होटल बनायेंगे तो नदी, पानी के बढ़ने पर अपनी जगह तो लेगी ही। सारे देश की यही स्थिति है, जितने पुराने नदी, नाले, तालाब आदि हैं

सभी को काटकर लोगों ने अपने मकान, दुकान, विश्रामगृह, होटल, रिसॉर्ट, न जाने क्या-क्या बना लिये, सरकार के घूसखोर अधिकारियों ने बनवा दिये, परन्तु प्रकृति तो घूस नहीं लेती, वह तो अपना अधिकार मांगती है, तब हमें आज की तरह दण्ड भोगना पड़ता है। इसके अतिरिक्त पहाड़ों में पत्थर के लिए, धातुओं के लिए सड़कों के निर्माण के लिए, बांध बनाने के लिए, नहर, सुरंग खोदने के लिए बड़े धमाके करते हैं, बड़ी-बड़ी भीमकाय मशीनें जब पर्वतों के हृदय को कंपाती है तो पहाड़ का अंग-अंग हिल जाता है, भूस्खलन, पत्थरों का गिरना, नदियों में पहाड़ गिर कर बांध बन जाना, उनके टूटने से बाढ़ का आना, यह सब तो अवश्यम्भावी है। वृक्षों के कटने से पहाड़ों से मिट्टी खिसक कर नदी-नालों में भर जाती है। पहाड़ों के पानी को अपने अन्दर समेटने की क्षमता कम हो जाती है और ये सारे कारण मिलकर भयंकर आपदा का रूप ले लेते हैं। ठण्डे स्थान गर्म होने लगते हैं। हरियाली रेगिस्तान में बदल जाती है, इसे मनुष्य ने बिगाड़ा है। कश्मीर के बहाने फिर एक बार प्रकृति का सन्देश समझने और निजी स्वार्थ में स्वयं के सुखों का नाश न करने का व्रत लें यही आज हम सबका कर्त्तव्य है। आचार्य चाणक्य ने प्रकृति के कोप को दुनिया का सबसे बड़ा कोप सम्भवतः इसीलिए कहा है-

प्रकृतिकोपः सर्वकोपेभ्यो गरीयान्।

- धर्मवीर

देव कहलाता वो

- मनोहर सिंह मनसा

सबसे मिलकर चलता जो, भद्र पुरुष कहलाता वो।
सब पर प्रेम लूटाता जो, महामानव कहलाता वो।।
भूखे को भोजन खिलाता जो, अन्नदाता कहलाता वो।
दीनों पर दया दिखाता जो, दीनानाथ कहलाता वो।।
भटकों को राह दिखाता जो, ज्ञानी है कहलाता वो।
धरम के मारग चलता जो, धरमी है कहलाता वो।।
भक्ति में सदा डूबा रहे, भक्त शिरोमणी कहलाता वो।
हर पल कर्म का पाठ पढ़ाता, कर्मवीर है कहलाता वो।।
सत्य पर अड़िग रहे जो, सत्यजित् कहलाता वो।
'मनसा' सबका स्नेही बनकर, नया समाज बनाता वो।।

- जोधपुर, राजस्थान

एक कल्पना

- सुखदा भक्तराम

विद्वान्, जिन्हें वेदों का ज्ञान है, उन पण्डितों को महापुरुष बनना होगा।
वेदों के ज्ञान को हर घर-घर, गली-गली, जन-जन में फैलाना होगा।
देर से सही महर्षि दयानन्द का ऋण चुकाना होगा।
वेद का ज्ञान केवल आर्यसमाज में न देकर हर मन्दिर में भी जाना होगा।
हर मन्दिर में रोज सुबह शाम यज्ञ और स्वाध्याय करवाना होगा।
वेद, उपनिषद्, रामायण, भगवद्गीता की पुस्तकें रखवाना होगा।
सभी भक्तों को मन्त्रोच्चारण और सन्ध्या, स्वाध्याय का लाभ बताना होगा।
ईश्वर की पूजा यज्ञकुण्ड में समिधा, घी, सामग्री डालकर करवाना होगा।
वेदकथा, मूर्तियों के (महापुरुषों के) चरित्र के गुण-गान तथा भजन गाना होगा।
मूर्तियों पर फल, अन्न, दूध न चढ़ाकर गरीबों में बंटवाना होगा।
फूल, पत्ते, झाडों से न तोड़कर सृष्टि की सुन्दरता, खुशबू को बचाना होगा।
सत्य का प्रचार करके ईश्वर की सच्ची भक्ति का मार्ग बताना होगा।
भगवान को नहीं पुजारियों को आदर से दान दक्षिणा देना होगा।
तभी अन्धविश्वास, पाखण्ड, पाप, छल, कपट हट जायेगा।
यज्ञ से दूषित वातावरण शुद्ध होकर हर प्राणी रोगों से दूर रहेगा।
अन्न, जल, पशु, जंगलों में वृद्धि होकर हर कोई आनन्दित रहेगा।
आयुर्वेद और ऋषियों की संस्कृति लौटकर भारत आर्य राष्ट्र बनेगा।
ईश्वर हमारी गलतियों को क्षमा कर हमें सद्बुद्धि प्रदान करेगा।
हमें सच्चे ईश्वर भक्त बनने का मौका मिलेगा।

- सुखविहार, २-२-६४७/ए/५१, सांई बाबा नगर, न्यू नालाकुण्टा, बाग-अम्बरपेट, हैदराबाद-५०००१३ (आ.प्र.)

योगी लोग मधुर प्यारी वाणी से योग सीखने वालों को उपदेश करें और अपना सर्वस्व योग ही को जानें तथा अन्य मनुष्य वैसे योगी का सदा आश्रय किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.११

इन्द्रस्य युज्यः सखा

- स्वामी विष्वङ्

यह बात सभी जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है और यह भी जानते हैं कि सुख बिना पुरुषार्थ के प्राप्त नहीं होता। हाँ, जब कभी बिना पुरुषार्थ के (किसी के द्वारा उपकार करने पर) सुख मिल भी जाता है, तो वह स्थायी नहीं होता। बिना पुरुषार्थ के जो सुख मिलता है, उस पर सम्पूर्ण जीवन निर्भर नहीं होता। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को कर्म करना ही पड़ता है। यदि मनुष्य पुण्य-धर्म-न्याययुक्त कर्म करते हैं, तो उनका फल निश्चित रूप से सुख के रूप में ही मिलेगा। यदि पाप-अधर्म-अन्याययुक्त कर्म करते हैं, तो उनका फल निश्चित रूप से दुःख के रूप में ही मिलेगा। यद्यपि फल मुख्यरूप से परमेश्वर ही देता है। फिर भी कुछ फल मनुष्य भी देते हैं परन्तु यह अवश्य समझना चाहिए कि प्रत्येक कर्म का फल मनुष्य नहीं दे सकता। हाँ, ईश्वर ने समाज की व्यवस्था बनाये रखने के लिए जितना अधिकार मनुष्य को दिया है उतने रूप में मनुष्य फल देता है परन्तु वहाँ पर भी मनुष्य अल्पज्ञ-अल्प सामर्थ्य वाला होने से फल कम (न्यून) ज्यादा (अधिक) दे सकता है। ऐसी स्थिति में ईश्वर ही पूर्ण रूप से न्याय करता है। जन्म का मिलना, अलग-अलग योनियों में जाना आदि बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण फल ईश्वर ही प्रदान करता है। जिस प्रकार से जन्म का मिलना ईश्वर-अधीन है उसी प्रकार मनुष्य जन्म का प्रयोजन (मोक्ष) भी ईश्वर-अधीन है। बिना ईश्वर की सहायता के आत्मा कुछ नहीं कर सकता।

मनुष्य के पूर्ण सुखी होने या दुःख सागर में डूबे रहने के पीछे कर्म ही कारण हैं। यदि न्याययुक्त कर्म करते हैं, तो पूर्ण सुखी हो सकते हैं और यदि अन्याययुक्त कर्म करेंगे, तो दुःख सागर में डुबकी लगाते रहना होगा। अल्पज्ञ मनुष्य सदा न्याययुक्त ही कर्म करे इसके लिए कोई ऐसा प्रेरक, हितैषी सदा उसके साथ जुड़ा रहे। ऐसा कौन हो सकता है? ऐसा कोई तो होना चाहिए जिससे मनुष्य अपनी मन की बातों को भी बता सके। किसी विषय में माता, किसी विषय में पिता, किसी विषय में भाई, बहिन आदि हो सकते हैं। परन्तु सभी विषयों में कोई ऐसा होना चाहिए जिसके सामने दिल खोल कर बता सके। ऐसा तो केवल **'मित्र'** ही हो सकता है जिसके सामने मनुष्य अपनी मन की बाते भी बता सकता है। मित्र कौन होगा यह तो मनुष्य के ऊपर निर्भर करता है कि वह माता, पिता, पति, पत्नी, भाई, बहन को बनाये अथवा किसी बाहर के व्यक्ति को मित्र बनाये। मित्र वह होता है जिसको अपना अभिन्न अंग मानकर उसके सामने अपनी मन की बाते बता सके। ऐसा मित्र कोई-कोई विरला ही होता है, बाकी सब नाम मात्र के मित्र होते हैं। मित्र उसे ही कहना चाहिए जो सदा साथ देता हो। चाहे सुख की स्थिति हो, चाहे दुःख की स्थिति हो, कभी साथ नहीं छोड़ता। जब कोई सच्चा मित्र साथ देता है तो मनुष्य न्याययुक्त कर्मों में लगा रहता है। परन्तु शरीरधारी मनुष्य, मनुष्य के साथ सदा साथ रह नहीं पाता है। जब कोई प्रेरक, हितैषी साथ न रहे, तो मनुष्य अन्याययुक्त कर्म कर सकता है तब वास्तव में मनुष्य का परीक्षण होता है कि अकेले में पाप करता है या पुण्य? यदि पाप करता है तो पाप को रोकने वाला कोई न कोई साथ होना चाहिए और वह साथी मित्र ही होना चाहिए, परन्तु शरीरधारी मित्र सदा साथ दे नहीं सकता। इसलिए मनुष्य को विचार करना चाहिए कि कौन ऐसा प्रेरक, हितैषी है जो सदा साथ दे सकता है। जिससे मनुष्य दुःख सागर से बच सके।

मनुष्य तीन प्रकार से कर्म करता है मन से, वाणी से और शरीर से। एक सीमा तक शारीरिक कर्मों से, एक सीमा तक वाणी के कर्मों से बच सकते हैं परन्तु मानसिक कर्मों को पूर्ण रूप से छुपा सकते हैं। क्योंकि शरीरधारी मानसिक कर्मों को जान नहीं सकते। इसलिए ईश्वर के शरण में जाना चाहिए। ईश्वर ही मनुष्य के सभी प्रकार के पापों को रोकने वाला है। ईश्वर को जीवन के साथ जोड़ कर चलने की आवश्यकता है। जो मनुष्य अपने जीवन में ईश्वर को सर्वाधिक महत्त्व देता है, वही ईश्वर को सदा अपने साथ अनुभव करता है। यद्यपि **'वेद'** ईश्वर को माता, पिता, गुरु, बन्धु, मित्र आदि के रूप में कथन करता है परन्तु मनुष्य ने गम्भीरता से नहीं लिया। इसलिए मनुष्य दुःख सागर में डूबता जा रहा है। यदि मनुष्य वेद के उपदेश को ध्यान से देखे तो उसे प्रतीति होगी कि ईश्वर मेरे लिए क्या मान्य रखता है? वेद स्पष्ट शब्दों में कहता है-

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा।।

(ऋग्वेद १.२.७.१९)

अर्थात् 'हे जीवो! विष्णोः व्यापकेश्वर के किये दिव्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय आदि कर्मों को तुम देखो। (प्रश्न) किस हेतु से हम लोग जाने कि व्यापक विष्णु के कर्म हैं? (उत्तर) यतो व्रतानि पस्पशे जिससे हम लोग ब्रह्मचर्यादि व्रत तथा सत्यभाषणादि व्रत और ईश्वर के नियमों का अनुष्ठान करने को जीव सुशरीरधारी होके समर्थ हुए हैं। यह काम उसी के सामर्थ्य से है, क्योंकि इन्द्रस्य युज्यः सखा इन्द्रियों के साथ वर्त्तमान कर्मों का कर्त्ता, भोक्ता जो जीव इसका वही एक योग्य मित्र है, अन्य कोई नहीं, क्योंकि ईश्वर जीव का अन्तर्यामी है। उससे परे जीव का हितकारी कोई और नहीं हो सकता, इससे परमात्मा से सदा मित्रता रखनी चाहिए।' (महर्षि स्वामी दयानन्द कृत आर्याभिविनय)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती परम-पिता परमेश्वर को जीव (आत्मा) का अन्तर्यामी बताकर यह स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले प्रत्येक कर्म का साक्षी है। चाहे मनुष्य शरीर से या वाणी से अथवा मन से कर्म करे। ईश्वर की दृष्टि से कोई भी कर्म ओझल नहीं हो सकता। इसलिए ईश्वर को मित्र बनाने की बात कही गई है। जो मनुष्य ईश्वर को सच्चे दिल से मित्र स्वीकार करता है, वह ईश्वर की प्रेरणा व उपदेश-आदेश के अनुरूप ही कर्म करने में विश्वास रखेगा। क्योंकि वह ईश्वर की सृष्टि उत्पत्ति की संरचना को देख कर परमेश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धान्वित हो जाता है। जब वह सृष्टि की स्थिति (सृष्टि के पालन रूप व्यवस्था) को देखता है तब उसे बोध होता है कि ईश्वर मुझ आत्मा के लिए क्या-क्या नहीं करते हैं। ईश्वर के पालन रूप व्यवस्था से इतना अभिभूत होता है कि स्वप्न में भी अनुचित करने का विचार भी नहीं लाता। मनुष्य यह स्पष्ट अनुभव करता है कि जिस आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) व्यवस्था में मनुष्य रहकर जिन उत्तम-उत्तम कार्यों को करने में समर्थ हुआ है उसका आधार केवल परमेश्वर है। मनुष्य परमेश्वर को अन्तर्यामी अनुभव कर परमेश्वर की उपस्थिति को स्वीकार करते हुए पाप कर्मों से बचे रह सकते हैं। वेदों का स्वाध्याय करने से बोध होता है कि परमेश्वर ही यथार्थ रूप में मित्र है और सबजनों के मित्र है। ईश्वर किसी का भी शत्रु नहीं है।

शरीरधारी मनुष्य किसी का मित्र होता है, तो किसी का शत्रु भी बन सकता है या होता है। परन्तु ईश्वर सब का मित्र है, किसी का भी शत्रु नहीं हो सकता। इसलिए ईश्वर सर्वप्रिय है अर्थात् सब से स्नेह करता है। सबके द्वारा प्रीति करने योग्य है और वह सब का कल्याण करता है। इस कारण वह सर्वमित्र है, इसलिए वेद ईश्वर को **'शन्नो मित्रः'** (ऋग्वेद १.९०.९) कहता है। यदि मनुष्य ईश्वर के नियमों का पालन करने लगे, तो निश्चित रूप से ईश्वर भी मनुष्य को मित्र बना सकता है। ईश्वर-आज्ञा का पालन करने वाला मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना भी करता है कि **'सुमित्रः सोम नो भव'** (ऋग्वेद १.९१.१२) अर्थात् हे सोम=शान्ति-सुख देने वाले परमेश्वर दया करके आप नः= हमारा सुमित्रः= उत्तम मित्र भव=बनो। हे परमेश्वर! आप सोम हो, आनन्द से परिपूर्ण हो, आप स्वयं आनन्दित हो, अपने भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाले हो। इसलिए आप सोम रूपी आनन्द से युक्त हो हमें भी अपने आनन्द से युक्त करो। आप हमारे मित्र बन कर हमें भी सौम्य बनाओ। हम भी सब के प्रति स्नेह कर सके जिससे सब मुझ से प्रीति करे कोई भी शत्रु न बने। हे परम मित्र! आप के संग में रहकर आप जैसा बन सकूँ। यह तभी सम्भव है प्रभो जब मैं सब को मित्र की दृष्टि से देखूँ। आप स्वयं आदेश करते हो कि-

'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे'

(यजुर्वेद ३६.१८)

अर्थात् मैं प्राणी मात्र के प्रति मित्र की दृष्टि से देखूँ किसी को भी शत्रु न बनाऊँ।

हे जगदीश्वर! जब मैं सब को मित्र की दृष्टि से देखूँगा तब आप मेरे सुमित्र बनोगे और मित्र बन कर मेरा कल्याण करोगे इसलिए वेद कहता है-

उरुष्या णो अभिशस्तेः सोम नि पाह्यंहसः।
सखा सुशेव एधि नः।।

(ऋग्वेद १.९१.१५)

अर्थात् हे सोम=आप हमारी सुरक्षा करने वाले और सुशेवः= पूर्ण सुख देने वाले सखा= सुमित्र हो, क्योंकि हे जगदीश्वर! आप अभिशस्तेः= सुख का विनाश करने वाले जितने भी कार्य (काम) हैं उन सब से नः= हम लोगों को उरुष्य=बचाने वाले हो। इतना ही नहीं आप हमारी अंहसः= अविद्या और नाना प्रकार के रोगों से नि=निरन्तर पाहि=रक्षा करते हो और नः हम लोगों को दुःख रहित परमानन्द को देने वाले एधि=बनो।

परमेश्वर जैसे मित्र को पाकर मनुष्य धन्य होता है और परमेश्वर के प्रति विशेष स्नेह करने लगता है अर्थात् ईश्वर की प्रत्येक आज्ञा को पूर्ण निष्ठा से पालन करने लगता है। जिस मनुष्य का ईश्वर जैसा सखा हो उसे कौन हानि पहुँचा

सकता है। इसलिए वेद कहता है-

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः।
न रिष्येत् त्वावतः सखा।।

(ऋग्वेद १.९१.८)

'अत्र श्लेषालङ्कारः। मनुष्यैरेवमीश्वरं प्रार्थयित्वा प्रयतितष्यम्। यतो धर्मं त्यक्तुमधर्मं ग्रहीतुमिच्छापि न समुत्तिष्ठेत। धर्माधर्मप्रवृत्तौ मनस इच्छैव कारणमस्ति तत्प्रवृत्तौ तन्निरोधे च कदाचिद्धर्मत्यागोऽधर्मग्रहणं च नैवोत्पद्यते।'

'अर्थात् इस मन्त्र में श्लेषालंकार है। मनुष्यों को इस प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करके उत्तम यत्न करना चाहिए कि जिससे धर्म के छोड़ने और अधर्म के ग्रहण करने को इच्छा भी न उठे। धर्म और अधर्म की प्रवृत्ति में मन की इच्छा ही कारण है उसकी प्रवृत्ति और उसके रोकने से कभी धर्म का त्याग और अधर्म का ग्रहण उत्पन्न न हो।'

(महर्षि स्वामी दयानन्द, भावार्थ ऋग्वेद १.९१.८)

यहाँ पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य धर्म या अधर्म मन से प्रारम्भ करता है। यदि मनुष्य परमेश्वर को अपना मित्र बना लेता है, तो ईश्वर सतत मन में प्रेरणा करता रहेगा और मनुष्य उस ईश्वर की प्रेरणा को अनुभव करता हुआ मन में अधर्म करने की इच्छा भी नहीं करेगा। यहाँ पर कोई यह न समझे कि यदि मनुष्य ईश्वर को मित्र नहीं बनाता है, तो क्या ईश्वर मन में प्रेरणा नहीं करता है? इसका समाधान इस प्रकार समझना चाहिए कि यद्यपि ईश्वर सब को समान रूप से प्रेरणा करता है। परन्तु जो मनुष्य ईश्वर को मित्र नहीं बनाता है, वह ईश्वर को भुला कर व्यवहार करने लगता है। जिसका परिणाम यह निकलता है कि वह स्वछन्द हो कर कर्म करने लगता है। ईश्वर की सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापकता और न्यायकारिता को अनुभव न करने के कारण ईश्वर की प्रेरणा को अनसुना कर देता है। इसलिए वह अधर्म करने लगता है, ऐसा व्यक्ति दुःख सागर में डुबकी लगाता ही रहेगा। जब तक ईश्वर की आज्ञा को अपने सम्मुख नहीं रखता तब तक अधर्म करता ही रहेगा। इसलिए ईश्वर को मित्र बनाने की बात कही जा रही है। अधर्म सदा मनुष्य को दुःखी करता रहेगा और मित्र वही है जो सदा अधर्म से बचाता रहे। मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति करना ही मित्र का कर्त्तव्य होता है। इसलिए वेद कहता है-

अकामकर्शनः सखा सखिभ्यः। (ऋग्वेद १.५३.२)

अर्थात् सखा= सुमित्र परमेश्वर सखिभ्यः= अपने मित्र मनुष्यों के लिए अकामकर्शनः= ईश्वर इच्छाओं का अघातक (अविनाशक) होता है। सच्चा मित्र वही होता है जो मित्र की किसी भी सत्य-न्याय युक्त इच्छा का घातक-विनाशक न हो। इस आधार पर तो केवल ईश्वर ही ऐसा सच्चा मित्र हो सकता है, जो मनुष्य की इच्छाओं को पूर्ण कर सकता हो। यदि मनुष्य मन से ईश्वर को सच्चा मित्र स्वीकार करता है, तो निश्चित रूप से ईश्वर मनुष्य पर विशेष कृपा दृष्टि रखेगा। अन्यथा ईश्वर भी सब लोगों (ईश्वर-आज्ञा का पूर्ण पालन न करने वालों) के समान उतना ही कल्याण करेगा जिससे बार-बार जन्म और मृत्यु को प्राप्त करते हुए कभी सुखी और कभी दुःखी होते रहेंगे। इसलिए ईश्वर-आज्ञा का पूर्ण पालन करना होगा तभी ईश्वर विशेष कृपा दृष्टि रख पायेगा।

जब मनुष्य कर्त्तव्य कर्मों को निष्ठा से करता है तब मनुष्य ईश्वर का प्रिय बन जाता है। वेद भी कहता है -

प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः।

(ऋग्वेद ७.१९.८)

अर्थात् हे मघवन्= परम-पिता परमेश्वर! हम नरः= मनुष्य ते= आपके प्रियासः= प्रिय बनें और आपके सखायः= मित्र बन कर अभिष्टौ= अत्मेच्छित= अभिष्ट शरणे=आनन्द के शरण में मदेम= रहकर आनन्दित रहें। यहाँ पर स्पष्ट शब्दों में मनुष्य को ईश्वर का प्रिय बनने के लिए संकेत किया है। यथार्थ में देखें तो परमेश्वर का प्रिय बनना और उसकी मित्रता को प्राप्त करना बहुत बड़े सौभाग्य की बात है। यह निश्चित है कि जगदीश्वर का प्रिय बनने वाला दुःखों से रहित हो कर मुक्त आत्मा बनकर सदा आनन्द में मग्न रहेगा। इसलिए परमेश्वर को मित्र बनाने की चेष्टा प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। जब लौकिक मित्र अपने मित्र को सभी संकटों से बचाता हो तब मित्रों का मित्र परम मित्र जगदीश्वर मनुष्य के संकटों को दूर क्यों नहीं कर सकता अर्थात् अवश्य ही दूर करता है। इसलिए वेद कहता है-

'सखा सखायमतरद् विषूचोः।' (ऋग्वेद ७.१७.६)

अर्थात् सखा= परम-मित्र ईश्वर सखायम्=मनुष्य (मित्र) को विषूचोः= संकट से अतरत्= बचाता है। निश्चित रूप से परमेश्वर मनुष्य के साथ सदा रहते हुए प्रत्येक क्षण मनुष्य की रक्षा करता है। ईश्वर मनुष्य की तरह विश्राम या निद्रा नहीं लेता है। चौबीस घण्टे सतत सुरक्षा प्रदान करता है। इस सम्बन्ध में वेद कहता है-

अग्ने त्वं सुजागृहि वयं सुमन्दिषीमहि।
रक्षाणोऽअप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि।।

(यजुर्वेद ४.१४)

अर्थात् अग्ने= ज्ञानस्वरूप परमेश्वर, सदा जागरूक रहने वाले जगदीश्वर! त्वम्=आप सुजागृहि= अत्यन्त जागरूक हो, सर्वदा, सर्वथा जागते ही रहते हो। इस कारण वयम्= हम लोग सुमन्दिषीमहि= बहुत आनन्द मनाते हैं और रात्री आने पर निश्चिन्त होकर सो जाते हैं। परन्तु आप अप्रयुच्छन्= बिना आलस्य व प्रमाद के नः= हमारी रक्ष= रक्षा करते हो नः=हमें पुनः= फिर प्रबुधे+कृधि=प्रातःकाल आने पर जगा देते हो। यहाँ पर मन्त्र में स्पष्ट शब्दों में कथन किया जा रहा है कि ईश्वर क्षण भर के लिए भी खाली नहीं रहते, निरन्तर रक्षा करने में संलग्न है। यह कार्य परम-मित्र हितैषी के बिना नहीं हो सकता। इसलिए मनुष्य को यह विचार करके चलना चाहिए कि यदि किसी मार्ग (पथ) पर चलूँ तो ईश्वर द्वारा दिखाया गया मोक्ष मार्ग पर ही चलूँ। क्योंकि परमेश्वर बिना स्वार्थ के मनुष्य को परमानन्द प्रदान करता है। इसलिए वेद कहता है-

यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा।

(ऋग्वेद ५.६४.३)

अर्थात् यत्= यदि मैं नूनम्= सचमुच गतिम्= गति को, चलने की शक्ति को प्राप्त करूँ तो मित्रस्य= परमेश्वर रूपी मित्र के, सबसे स्वार्थरहित प्रेम करने वाले परमेश्वर के बताये पथ=मार्ग से यायाम्=चलूँ और अश्याम्= लक्ष्य को प्राप्त होऊँ। यह निश्चित बात है कि मोक्ष मार्ग में चलने का बल तो परमेश्वर के बतलाये मार्ग पर ही सम्भव है। मोक्ष के लिये इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का निःशुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमशः हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

पं. श्रद्धाराम की आड़ में ऋषि दयानन्द पर प्रहार

- राजेन्द्र जिज्ञासु

श्रद्धाराम फिलौरी के लेखक का भ्रम भञ्जनः- साहित्य अकादमी के कर्ता-धर्ता पूर्वाग्रह की अन्धेरी कोठरियों में बैठे बिना जाँच-पड़ताल के भ्रामक, तथ्यहीन और अनर्गल पुस्तकें भी प्रकाशित करके बहुत बड़े देश सेवक, गवेषक तथा साहित्य सेवी कहलाना चाहते हैं। इन्हीं दिनों इनके द्वारा प्रकाशित एक अनुभवहीन हिन्दी प्राध्यापक की पुस्तक श्रद्धाराम फिलौरी देखने को मिली। भोलेभाले लेखक को इतिहास का सामान्य सा भी ज्ञान होता तो वह किसी के भ्रमित करने पर अन्धेरे में बैठे यह तीर न चलाता। हिन्दी साहित्य की कुछ पुस्तकों का ज्ञान होना अच्छी बात है परन्तु तत्कालीन पत्रों तथा इतिहास विषयक तत्कालीन साहित्य का किञ्चित भी ज्ञान न होते हुए लेखक ने श्रद्धाराम जी जीवनी की आड़ में युग पुरुष महर्षि दयानन्द पर जो टिप्पणियाँ की हैं उसे दुस्साहस ही तो कहा जायेगा। साहित्य अकादमी ने इससे पहले भारत के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने वाले मीर उस्मान अली निजाम हैदराबाद की उर्दू जीवनी में उसे उदार, प्रजाहितैषी, उन्नत शासक सिद्ध करने का पाप किया है।

देश की अखण्डता, स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने वाले वीर काशीनाथ धारूर, माता गोदावरी ईटेकर, वीरवर कृष्णराम ईटेकर, हुतात्मा गोविन्दराव और हुपला के वीर भीमराव पटेल इसी निजाम के राज में देशहित, जनहित के लिए जीवित जलाय गये। स्वराज्य संग्राम में केवल निजाम के राज में ही ये प्राणवीर जीवित जलाये गये। ऐसी पुस्तक के प्रकाशन का घृणित पाप साहित्य अकादमी ने ही किया। अब श्री राजेन्द्र टोकी की पोथी की निराधार, तथ्यहीन तथा थोथी बात का विवेचन करते हैं।

ज्योतिष का डंका बजायाः- लेखक एक हास्यास्पद बात लिखकर श्रद्धाराम जी का गुणगान करते हुए लिखता है, 'पण्डित जी एक कुशल ज्योतिषी थे। लेकिन इसका चमत्कारी उपयोग उन्होंने स्वयं को सिद्ध योगी या अवतार सिद्ध करने के लिए नहीं किया। यदि ऐसा करते तो निस्संदेह उनके नाम के झण्डे झूलते। मगर देश में अपने इस हुनर का डंका बजाने के बावजूद उन्होंने कभी इसका उपयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं किया। फिर १८७९ में इसे छोड़ दिया और कह गए कि मोक्ष सुख के जिज्ञासु को इस भ्रम जाल के लोभ में पड़कर अपनी आत्मा को कष्ट नहीं देना चाहिए।'[१]

हम इसे लेखक की सरलता या भोलापन ही तो कहेंगे कि वह ज्योतिष के ज्ञान को श्रद्धाराम जी का हुनर मानकर लिखता है कि उन्होंने इससे स्वार्थ सिद्धि नहीं की। वह अवतार और सिद्ध योगी भी प्रसिद्ध हो जाते परन्तु श्रद्धाराम जी ने इसे भ्रम-जाल मानकर सन् १८७९ को छोड़ दिया। लेखक बार-बार लिखता है कि श्रद्धाराम जी को जीवन भर आर्थिक तंगी रही। उनको गोरे ईसाइयों की पेट भरने के लिए नौकरी करनी पड़ी। वह संसार से निराश, हताश, उदास हो गये। ज्योतिष के इस हुनर से उनको अपने दुःखद अन्त का भी पता न चला। वह चेले तुलसीदेव का विवाह करने का मन बना चुके थे। मन की गुप्त बातें जानने की विद्या श्रद्धाराम जी के पास थी। वह चेले के मन की बात न जान सके। चेले ने विवाह नहीं किया। सन् १८७९ में श्रद्धाराम जी ने ज्योतिष को भ्रमजाल पाखण्ड घोषित किया। ऐसा क्यों किया? इस परिवर्तन का कारण लेखक नहीं जानता।

यह ऋषि का प्रताप थाः- हम इस रहस्य पर से पर्दा उठाते हैं। महोदय श्रद्धाराम जी का हरिद्वार कुम्भ की घटनाओं से हृदय परिवर्तन हो गया। वह संस्कार विधि और वैदिक सन्ध्या का गुणगान करने लग गया। वह महर्षि की अमृत वर्षा फिलौर में करवाना चाहता था। अब वह ऋषि दर्शन का चाहवान् था। ऋषि के प्रभाव से फलित ज्योतिष को भ्रम जाल घोषित किया। इन बातों का लिखित प्रमाण चाहिये तो कृपया अजमेर के ऋषि मेले पर आयें। वहाँ श्रद्धाराम जी का हस्तलिखित पत्र पढ़ लेना। आपका भ्रम-भञ्जन हो जायेगा। उस पत्र पर पं. श्रद्धाराम तिथि लिखना भूल गये। तब उनके मन में उथल-पुथल मची हुई थी। पत्र की अन्तसाक्षी से पता चल जायेगा कि वह पत्र कुम्भ मेला के पश्चात् ही लिखा गया। सन् १८८१ में तो पण्डित जी का निधन भी हो गया। अन्तिम दिनों में ज्योतिष का धन्धा जो भ्रमजाल मानकर छोड़ा तो इसका कारण महर्षि दयानन्द का जादू था, कुछ और नहीं।

शासकों के प्रति श्रद्धाराम जी का दृष्टिकोण:- आपने श्रद्धाराम जी के शासकों के प्रति दृष्टिकोण का परिचय देते हुए हरबंस कौर के ये शब्द उद्धृत किये हैं, ''श्रद्धाराम अपने जीवन में हाकिमों की आँखों में अच्छा बनने तथा देसी राजाओं के दरबार में सम्मान प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहा था।''[२]

महोदय! आपने इस कथन का प्रतिवाद करना चाहा परन्तु आप ऐसा करने में सर्वथा विफल रहे। आप श्रद्धाराम का लिखित व मौखिक एक तो वचन उद्धृत करें जिसमें किसी राजा, महाराजा अथवा अंग्रेज अधिकारी का कभी खुलकर विरोध किया हो।

जिस ऋषि दयानन्द पर इस पुस्तक के लेखक श्री राजेन्द्र टोकी ने छद्म वार किये हैं वह पहला भारतीय विचारक और नेता था जिसने सन् १८५७ की क्रान्ति को 'गदर' नहीं माना। श्रद्धाराम जी के गृहनगर फिलौर के समीप जालन्धर नगर में महर्षि ने तब गोरों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार करने की घोर निन्दा करते हुए इसे विप्लव-क्रान्ति बताया था। इसके लम्बे समय पश्चात् स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जी ने इसे भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम घोषित करते हुए इस पर अपना अमर ग्रन्थ लिखा। महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन चरित्र में ऋषि का वह व्याख्यान छपा देख लें।

लेखक की निराधार कल्पना:- श्रीमान् जी ने कोई ठोस प्रमाण दिये बिना यह लिखा है, ''१८७९ में हरिद्वार में कुम्भ के अवसर पर पण्डित जी वहाँ गए। वे प्राय: छोटे-बड़े पर्व पर वहाँ जाते रहते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती से वहाँ के ब्राह्मण त्रस्त थे। चारों दिशा के पण्डितों की प्रेरणा से दयानन्द को शास्त्रार्थ के लिए अनुरोध किया, दयानन्द ने स्वीकार कर लिया। समय निश्चित हो गया। अभी आए, अभी आए, कहते-कहते जब बहुत समय हो गया, तो पता चला कि स्वामी जी देहरादून को कूच कर गए। इस प्रकार दूसरी बार दयानन्द सरस्वती ने पलायन किया और पण्डितों की जय-जयकार हुई।''[३]

लेखक जी ने यहाँ यह माना है कि कुम्भ पर ब्राह्मण स्वामी दयानन्द से त्रस्त थे। ''चारों दिशा के पण्डितों की प्रेरणा से दयानन्द को शास्त्रार्थ के लिए अनुरोध किया।'' यह कथन इतिहास विरुद्ध है। काशी शास्त्रार्थ वाले पं. विशुद्धानन्द जी वहीं थे। वह क्या विद्वत्ता व प्रसिद्धि में श्रद्धाराम जी से कम थे? वह श्रद्धाराम आदि के विरुद्ध थे। फिर चारों दिशा के पण्डितों की बात तो मिथ्या सिद्ध हुई।

ऋषि ने शास्त्रार्थ की बात कब हाँ की और कब न की? ऋषि का पत्र व्यवहार छपा मिलता है। किसी पत्र-पत्रिका का भी कोई प्रमाण नहीं। महर्षि ने श्रद्धाराम जी के साथियों से कहा था शास्त्रार्थ का स्थान ऐसा हो जो न तुम्हारा हो और न हमारा हो। उसका प्रबन्ध सरकारी हो। मैं अभी आया, अभी आया, आपका यह कथन कपोल कल्पित है।

श्रीमान् जी! श्रद्धाराम जी के चेले लाला भोलानाथ ने फिलौर पत्र लिखकर पण्डित जी को हरिद्वार बुलवाया था। वह वहाँ स्वामी दयानन्द जी का भक्त बन गया। पण्डित जी को वहीं छोड़कर सहारनपुर चला गया। ऋषि अन्त तक हरिद्वार रहे। पर्वो के दो-तीन दिन पहले देहरादून जाना चाहते थे। सवारी का प्रबन्ध होने पर अगले दिन देहरादून गये। श्रीमान् राजेन्द्र जी के लेख की किसी भी बात की ऋषि के घोर निन्दक लाला जीयालाल जी के ग्रन्थ से भी पुष्टि नहीं होती।

आपने हरिद्वार के कुम्भ मेला पर जो कुछ लिखा है उसकी वास्तविकता श्रद्धाराम जी के सहयोगी पं. गोपाल शास्त्री जम्मू के 'विद्या प्रकाशक' मासिक लाहौर के जून १८७९ के अंक में पृष्ठ ४६-४७ पर छपे वक्तव्य को पढ़कर जान लें। उन्होंने इसमें शपथपूर्वक यह लिखा है, ''मुझे हरिद्वार में बड़ी लज्जा तथा परमेश्वर का भय अनुभव हुआ जब पं. श्रद्धाराम के साथ मिलकर अनुचित कार्यवाहियाँ करते थे।'' 'विद्याप्रकाशक' का यह अंक हमारे पास देख लेवें।

पं. श्रद्धाराम जी का अन्त समय का लिखा पत्र जो आपने उद्धृत किया है इसमें वह अपने मित्र पं. गोपीनाथ सम्पादक[४] मित्र विलास को लिखते हैं कि अब सनातन धर्म की रक्षा ईश्वर को ही नहीं भाती, हम इसकी रक्षा में लगे रहे, यह बहुत भयंकर भूल की, हम नौकरी करते, व्यापार करते तो आनन्द लूटते। हमने तो जगत का भला करते अपना जन्म खो दिया। घर के रहे न घाट के।[५]

आप ही के इस उद्धरण से प्रमाणित होता है कि श्रद्धाराम जी का मन टूट चुका था। वह संसार से उदास, निराश व हताश होकर चल बसे। उनको अपने किये पर घोर पछतावा था। ऐसे व्यक्ति की आड़ लेकर महर्षि दयानन्द जैसे निर्भीक ब्रह्मचारी, सत्य वक्ता, महाविद्वान्, विचारक, सुधारक, स्वराज्य के मन्त्र द्रष्टा वीतराग संन्यासी पर प्रहार करना लेखक के लिए अशोभनीय है। कुछ पढ़ लिखकर प्रामाणिक बात लिखते तो हम भी लेखक की वाह! वाह!! करते।

लेखक ने पं. श्रद्धाराम जी को पंजाब का प्रथम उपेदष्टा लिखा है।[६] आपको इससे प्रसन्नता होती है तो हम इस पर आपको क्या कह सकते हैं। सिख गुरुओं तथा वैष्णव सम्प्रदाय के डेरों के आचार्यों (यथा ध्यानपुर और पिण्डौरी जिला गुरदासपुर) और उदासी व निर्मले साधु पंजाब में घूम-घूम कर ही उपदेश देते थे। इन बातों का ज्ञान इतिहास के अध्ययन से हो सकता था। ऐसा लगता है उसमें आपकी रुचि नहीं है। आपने सत्यामृत प्रवाह के लिए लिखा है, ''१८८८ में प्रकाशित होने के बाद इसका कोई संस्करण नहीं निकला।''[७] आपकी जानकारी के लिए निवेदन किया जाता है कि कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली से इसे पुनः प्रकाशित किया गया है।

पं. श्रद्धाराम जी का अन्त समय का पछतावा आपके सामने हैं इसके विपरीत महर्षि दयानन्द के अन्त समय का उनका अमर वाक्य भी आपके ध्यान में लाना आवश्यक है। ''प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो।'' उनको देह-त्याग के समय जो शान्ति थी, यह उसका प्रबल प्रमाण है। गोरा डॉक्टर न्यूमैन तथा पं. गुरुदत्त विद्यार्थी सरीखे विचारक उसके साक्षी हैं। ऋषि ने निज बलिदान देकर देश, जाति व धर्म रक्षा के लिए बलिदान की परम्परा चलाई। महोदय! कभी तो कृतज्ञता का प्रकाश करते हुए उनके प्रति कुछ श्रद्धा सुमन अर्पित कर दिया करें।

अन्त में हम आर्य विद्वानों, सभा, संस्थाओं के संचालकों से करबद्ध विनती करते हैं कि वैदिक धर्म तथा महर्षि पर जब वार प्रहार हो तो आप मूकदर्शक न बने रहें। परोपकार निरन्तर सबके उत्तर देता चला आ रहा है। यह कोई उपकार नहीं, हम सब का कर्त्तव्य है। सब गुरुकुल बोलें, टंकारा से, रोजड़ से, काशी से, अलीगढ़ से, करतारपुर से सब धर्मरक्षा के लिए सोत्साह लिखें, बोलें। स्कूलों, कॉलेजों से तो कुछ आशा रही नहीं।

गोरक्षक फूलसिंह जुलानी वाला:- हिसार से निकलने वाले मासिक 'गोहितकारी' में प्रकाशित वीर हरफूलसिंह जाट जुलानी (हरियाणा) पर प्रकाशित टिप्पणी व कविता की ओर मेरा ध्यान दिलाया गया। गो भक्त, ऋषि भक्त हरफूलसिंह पर परोपकारी में कई बार लिखा गया। हर्ष का विषय है कि उक्त पत्रिका ने एक दिवंगत आर्यवीर की महिमा को जाना है। हम परोपकारी में यह भी बता चुके हैं कि आर्य नेता चौ. मित्रसेन की धर्मपत्नी वीर हरफूलसिंह जी के वंश से हैं। न जाने हम लोग यह लिखना क्यों भूल जाते हैं।

अगस्त के गोहितकारी के अंक में प्रकाशित एक टिप्पणी पर हरियाणा के एक भाई ने मुझसे स्पष्टीकरण माँगा है। इस पत्रिका में हरफूल वीर का काल १८९२-१९३६ लिखा गया है। क्या यह सत्य है? निवेदन है कि परोपकारी में जो कुछ लिखा गया था उसे ध्यान से पढ़ा जाता तो प्रश्न पूछना ही न पड़ता। गोहितकारी के सम्पादक की जानकारी का स्रोत क्या है? यह तो बताया नहीं गया।

इस सेवक की विनती है कि हरफूलसिंह महर्षि के जीवन काल में आर्यसमाजी बनने वाले सबसे पहले आर्य जाटों में से एक था। इसका प्रमाण परोपकारी में छप चुका है। जो देखना चाहें तो उनको दिखा भी देंगे। गोहितकारी के सम्पादक जी उनका जन्म सन् १८९२ बताते हैं। 'आर्य समाचार' मेरठ के सन् १८८४-१८८५ के अंकों में उनका नाम पता इस पत्र के ग्राहकों की सूची में छपा मिलता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सन् १८८४-१८८५ में हरफूलसिंह २०-२१ वर्ष का तरुण तो होगा ही। उनके कुल के लोग, जुलानी के नब्बे वर्ष के बृद्ध भी बता देंगे कि इस प्राणवीर की सन् १९३६ में क्या आयु थी? सम्भव है स्वामी भीष्म जी आदि पुराने गीतकारों के भजनों में भी कोई संकेत मिले। आर्यवृन्द मेरा कोई हठ नहीं है। मैंने तो एक प्रतिष्ठित लोकप्रिय पत्र का प्रमाण दे दिया। सन् १९३६ में वह ४४ वर्ष का था, इसे सिद्ध करना सम्पादक गोहितकारी का कर्त्तव्य है। जिस विषय का ज्ञान ही न हो उस पर लेखनी चलाना हितकर नहीं।

'श्रद्धाराम फिलौरी' पुस्तक के लेखक के नाम पत्र:- साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित श्रद्धाराम फिलौरी पुस्तक के लेखक श्री डॉ. राजेन्द्र टोकी जी को मैंने एक प्रेम भरा पत्र लिखकर उनकी भूल का उन्हें ज्ञान करवाया है। उन्हें लिखा है कि पण्डित श्रद्धाराम जी के ऋषि दयानन्द के प्रति मनोभावों को जानने के लिए वह ऋषि मेला पर अजमेर आकर पं. श्रद्धाराम के हाथ का लिखा पत्र पढ़कर फिर ऋषि पर टिप्पणी करें।

कुम्भ मेले के समाचार तत्कालीन पत्रों में जो छपे, वे आपने नहीं देखे। उनमें श्रद्धाराम जी के चेलों के वक्तव्य पढ़कर ऋषि पर लिखते तो इतिहास से अन्याय न होता। ऋषि का पत्र-व्यवहार तो देखा होता। कन्हैयालाल जी तथा काशी के पण्डित विशुद्धानन्द जी पर कुछ लिख पढ़कर यह पुस्तक आप लिखते तो अच्छा होता। ऋषि पर्वी से अगले दिन देहरादून गये थे। आपका लेख निराधार है। देखें वह क्या उत्तर देते हैं? वह अजमेर आयेंगे तो हमारे

मान्य विद्वान् उनको सब प्रमाण व स्रोत उपलब्ध करवा देंगे। श्री विरजानन्द जी, श्री धर्मवीर जी, डॉ. वेदपाल जी आदि लेखक का भ्रम-निवारण कर देंगे। उधर आर्यवीर लक्ष्मण जी 'जिज्ञासु' साहित्य अकादमी के अधिकारियों से सम्पर्क करने के लिए उनके नम्बर व पते ले आये हैं। परोपकारिणी सभा चुप करके नहीं बैठेगी। जो करना है, वह किया जायेगा।

चलभाष पर प्रश्नोत्तर धर्म चर्चा:- आर्यसमाज के अनुभवी तपे विद्वान् तथा उदीयमान विद्वान् युवक चलभाष पर इस सेवक से प्रश्नोत्तर व धर्मचर्चा करते रहते हैं। नई-नई जानकारी माँगते रहते हैं। मैं भी चलभाष कम ही बन्द करता हूँ। यात्रा में नेटवर्क के कारण विघ्न पड़ता है। वह अपवाद अवश्य है। गम्भीर प्रश्न लिखकर भेजें जायें तो अधिक लाभ हो। चलभाष पर प्रवचन व्याख्यान ठीक नहीं। श्री पं. रामचन्द्र जी आर्य सोनीपत तथा डॉ. विनय विद्यालङ्कार जी का उदाहरण देकर मैं सबको कहता हूँ कि मैं बिना मिलान किये (भले ही मुझे कण्ठाग्र हो) किसी तथ्य की प्रमाण की जानकारी नहीं देता। श्री रामचन्द्र जी विनय जी को कहा, आप हमारे प्रतिष्ठित सम्मानित विद्वान् हैं थोड़ी सी असावधानी से कुछ बताने में चूक हो गई तो जैसे विद्वानों से मेरे द्वारा की गई भूल आगे प्रसारित होती जायेगी। इन दोनों ने मेरी भावना का पूरा आदर किया।

बलिया से श्री विशाल तथा बिजनौर से श्री विजय दो मेधावी लगनशील युवकों से कहा कि जितना ज्ञान आप चाहते हैं वह आमने-सामने बैठने से मिलेगा। चलभाष पर तो मैं पं. चमूपति, स्वामी योगेन्द्रपाल और स्वामी दर्शनानन्द आपको घोट कर नहीं पिला सकता। एक दो मास कोई पं. शान्तिप्रकाश नहीं बन सकता। लगे रहो। हम तुम्हारे साथ हैं।

डॉ. ब्रह्ममुनि जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से लेकर 'कुरान सत्यार्थप्रकाश के आलोक में' पढ़ा तो दंग रह गये। चलभाष पर कहा, मुझे तो इतनी खोजपूर्ण अत्युत्तम का पता ही न चला। आपने दुनियाभर के मुस्लिम विद्वानों के नये-नये ग्रन्थों के इतने प्रमाण देकर सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव व महत्त्व जताया। मैंने कहा, आर्यसमाज ने पूरे उत्साह से इस ग्रन्थ को प्रचारित नहीं किया। इसमें मेरा क्या दोष? अभी इन दिनों हमारे एक माननीय युवा विद्वान् 'Historical Development of the Quran' पुस्तक खोज लाये। यह करणीय उत्तम कार्य था। इस पुस्तक का उर्दू अनुवाद बहुत पहले परोपकारिणी सभा को सौंप दिया था। इस पर फिर लिखा जायेगा।

टिप्पणियाँ

१. द्रष्टव्य श्रद्धाराम फिलौरी लेखक राजेन्द्र टोकी, पृष्ठ २१

२. द्रष्टव्य श्रद्धाराम फिलौरी लेखक राजेन्द्र टोकी, पृष्ठ १५

३. वही पृष्ठ १४

४. द्रष्टव्य विद्या प्रकाशक उर्दू मासिक लाहौर जून १८७९

५. द्रष्टव्य श्रद्धाराम फिलौरी लेखक राजेन्द्र टोकी, पृष्ठ १५

६. द्रष्टव्य वही पृष्ठ ६०

७. द्रष्टव्य वही पृष्ठ ६१

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

ऋषि मेला २०१४ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि मेला ३१ अक्टूबर, १, २ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**-७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : -१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

आर्य समाज का प्रथम नियम

-प्रो. वीरेन्द्र कुमार अलंकार

पिछले अंक का शेष भागं....

(ख) 'सत्य विद्या' में 'सत्य' का अर्थ-कई आक्षेपकर्त्ता कहते हैं कि स्वामी जी ने प्रथम नियम में अर्थ और शब्दों की कई गाँठे लगा दी है। सीधा, सरल, संक्षिप्त और स्पष्ट नियम यह होना चाहिए था- सब विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है। स्वामी जी ने कहा है कि 'सब सत्य विद्या' तो क्या विद्या असत्य भी होती है? इसका समाधान यह है कि पहले सत्य और विद्या शब्दों का अर्थ समझ लिया जाए-

१. यह बताया ही जा चुका है कि 'विद्या' का अर्थ 'ज्ञान' भी है, क्योंकि विद् ज्ञाने धातु से यह पद निष्पन्न है। 'ज्ञान' यथार्थ भी हो सकता है और अयथार्थ भी। उदाहरण के लिए 'आर्य' शब्द को ही लीजिए। इस शब्द के विषय में तीन प्रकार की स्थितियाँ हैं। पहली तो यह कि कुछ लोग 'आर्य' शब्द जानते ही न हों, इसे अज्ञान की स्थिति कह सकते हैं। दूसरी स्थिति उन विचारकों की है, जो कहते हैं, 'आर्य' अमुक-अमुक स्थान से आए हैं और आर्यों की शक्ल सूरत भी बता दी कि आर्य लोग लम्बी नाम, गौरवर्ण, मोटी मोटी आँखों वाले होते हैं। इसे आप अयथार्थ ज्ञान की कोटि में रख सकते हैं। तीसरी स्थिति यथार्थ ज्ञान की है। इस युग में ऋषि दयानन्द ने यह बताकर लोगों की आँखें खोल दी कि आर्य एक गुणवाची शब्द है। वस्तुत: जो प्रगतिशील व्यक्ति है, उसे ही 'आर्य' कहते हैं, क्योंकि 'ऋ' गतौ धातु से 'आर्य' शब्द निष्पन्न होता है। जो यह कहते हैं कि व्यापार या लूटपाट के लिए ये आर्य लोग घूमा करते थे, वह इसलिए गलत है कि व्यापार आदि के उद्‌देश्य से गमन करने वाले लोगों को 'आर्य' नहीं 'अर्य' कहा जाता है। यह पाणिनि के **अर्य:स्वामिवैश्ययो:** (पा. ३.१.१०३) सूत्र से सिद्ध है।

आइए, दुर्जनपरितोषन्याय से एक बार यह मान लेते हैं कि आर्य शब्द शक्ल/सूरत को बताने वाला जातिवाचक शब्द है, अर्थात् उनकी लम्बी नाक, गौरा वर्ण आदि होते थे। सब जानते हैं कि भारत में एक विशेष प्रकार की आँख, नाक वाले लोगों को गोरखा कहा जाता है। गोरखा कहते ही एक विशेष आकृति का बोध हमें होता है? इसी प्रकार एक विशेष प्रकार की शक्ल/सूरत वाले लोगो को 'मंगोलियन' कहा जाता है। फिर तो आर्य, गोरखा, मंगोलियन ये सब विशेष आकृति के बोधक शब्द हो गए। अब यह बताइए यदि कोई कहे कि 'आओ सारे भारत को गोरखा' बनाएँ या 'पूरे विश्व को मंगोलियन' बनाएँ तो क्या आप उसपर हँसेंगे नहीं? क्योंकि सारे विश्व को न गोरखा (विशेष शक्ल सूरत वाला) बनाना सम्भव है और न ही मंगोलियन। किन्तु, ध्यान दीजिए वेद में सारे विश्व को आर्य बनाने की बात कही गई है- **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** यदि खास नाक, आँख वाले आर्य हैं, तो सबको वैसी ही नाक, आँख वाला कैसे बनाया जा सकता है। इसलिए 'आर्य' गुणवाची शब्द है। इसका सीधा सरल अभिप्राय है श्रेष्ठ और सबको श्रेष्ठ 'आर्य' बनाने की बात की जा सकती है। इस प्रकार एक 'आर्य' शब्द का ज्ञान दो प्रकार का अर्थात् मिथ्याज्ञान और सत्य ज्ञान मनुष्य को हो सकता है, तो स्वामी जी के 'सत्य विद्या' शब्द पर यह व्यर्थ की आपत्ति क्यों? विद्या अर्थात् ज्ञान सत्य भी हो सकता है और असत्य (मिथ्या) भी। अत: यहाँ सत्य विशेषण देना सर्वथा युक्त है। सत्य विद्या में सत्य विशेषण है और विद्या विशेष्य।

२. आर्य समाज के इस प्रथम नियम में सत्य के ग्रहण से मिथ्या ज्ञान का निरास समझना चाहिए। यदि यहाँ 'विद्या' शब्द केवल एकबार ही गृहीत होता, तो व्यापक अभिप्राय रह जाता । क्योंकि 'सब सत्य विद्या' यहाँ पर सत्य का अर्थ शाश्वत भी है। सृष्टिक्रम शाश्वत है, सृष्ट्यारम्भ में वेद का आविर्भाव शाश्वत है। अर्थात् सब प्रकार की शाश्वत विद्या का मूल आधार परमेश्वर है। 'सब सत्य विद्या' और 'विद्या' यहाँ दोनों स्थानों पर 'विद्या' का अर्थ या तात्पर्य अलग-अलग है। 'सत्य विद्या' का अर्थ 'परा विद्या' और 'विद्या' का 'अपरा विद्या' अर्थ भी ग्राह्य है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषयविचार प्रकरण में कहा गया है- **वेदेषु द्वे विद्ये वर्त्तेते अपरा परा चेति। तत्र यया पृथिवीतृणमारभ्य प्रकतिपर्यन्तानां पदार्थानां ज्ञानेन यथावदुपकारग्रहणं क्रियते सा अपरोच्यते । यया चादृश्यादिविशेषणयुक्तं सर्वशक्तिमद् ब्रह्म विज्ञायते सा पराऽर्थादपराया: सकाशादत्युत्कृष्टास्तीति वेद्यम्।** यहाँ इसका अर्थ स्वामी जी की भाषा में ही देखिए- वेदों में दो विद्या हैं- अपरा, दूसरी परा। इनमें से अपरा यह है कि जिससे पृथिवी और तृण से लेके प्रकृतिपर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है और

दूसरी परा कि जिससे सर्वशक्तिमान् ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। यह परा विद्या अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है, क्योंकि अपरा का ही उत्तम फल परा विद्या है। ध्यान दीजिए स्वामी जी ने हिन्दी अर्थ में दो विद्या कहा है, दो विद्याएँ नहीं। यह स्वामी जी की शैली है। अब वैशेषिक को भी देखिए- **यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्म** (१.१.२)। स्वामी जी ने सत्य विद्या और विद्या यहाँ दो बार विद्या शब्द को ग्रहण करके अभ्युदय और निःश्रेयस की ओर भी संकेत कर दिया है। जीवन के दो ही प्रमुख लक्ष्य हैं- अभ्युदय और निःश्रेयस। सत्य विद्या से निःश्रेयस और विद्या से अभ्युदय होता है। इसलिए यदि विद्या का अकेला ग्रहण होता तो दोष या सन्देह की सम्भावना हो सकती थी । अतः दो बार विद्या का ग्रहण सप्रयोजन है। वेद में विद्या शब्द केवल पारमार्थिक या शाश्वत ज्ञान के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है, भौतिक और व्यावहारिक ज्ञान के लिए भी प्रयुक्त है। यह मन्त्र देखिए-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

- यजुर्वेद-४०.१४.।।

यहाँ विद्या से अमृत की बात कही गई है, पर एक अन्य मन्त्र में विद्या से घोर अन्धकार में जाने की बात है-

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।।

- यजुर्वेद-४०.१२।।

क्या यहाँ दोनों मन्त्रों में 'विद्या' का एक ही अर्थ है। पहले मन्त्र में विद्या का तात्पर्य ब्रह्मविद्या, पारमार्थिक या शाश्वत विद्या अर्थात् 'सत्य विद्या' है और दूसरे मन्त्र में 'विद्या' का अर्थ लौकिक, भौतिक या पदार्थ विद्या या शब्द अर्थ और इनके सम्बन्ध का ज्ञान माना है। इसलिए आचार्य की दृष्टि बड़ी व्यापक है। दो बार विद्या का तात्पर्य भिन्न है और बाद के विद्या का तात्पर्य भिन्न।

यदि हमें कोई अर्थ समझ में न आये, तो क्या वह अर्थ बेकार हो गया। हम चलते चलते पेड़ से टकरा गए तो पेड़ को गाली देना कहाँ तक ठीक है- **नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति।** 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' और 'ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः' इन दो मन्त्रभागों में विरोध है क्या? पहले कह दिया कि विद्या से मुक्ति प्राप्त होती है, फिर कह दिया विद्या से घना तमस् प्राप्त होगा। तात्पर्य को न समझने वाले के लिए तो यह सब उल्टा-पुल्टा ही है। अतः आर्य समाज के प्रथम नियम में उक्त 'सब सत्य विद्या' का अर्थात् सम्पूर्ण शाश्वत विद्या, ब्रह्माण्डविद्या किंवा परब्रह्म विद्या का आदि उत्स क्या है? इसका उत्तर है- ईश्वर । क्योंकि वेद में जिस शाश्वत विद्या का प्रतिपादन हुआ है, उस वेद का उदय कहाँ से हुआ है? उत्तर स्पष्ट है ईश्वर से। जीव हो या प्रकृति अथवा परमात्मा इनके यथार्थ ज्ञान का उत्स वेद है और वेद ईश्वर की वाणी है। इसीलिए इस सत्य विद्या का आदि मूल परमेश्वर है।

(ग) पदार्थ का तात्पर्य- एक आपत्ति यह की जाती है कि सब पदार्थों का आदि मूल परमेश्वर कैसे हो सकता है? वैशेषिक दर्शन में आत्मा भी पदार्थ माना गया है और पृथिवी, जल, वायु आदि भी। पृथिवी, जल, वायु आदि तो मूलप्रकृति आविर्भूत हुए हैं। स्वयं स्वामी जी की स्थापना है कि ईश्वर, जीव, प्रकृति ये तीन तत्त्व अनादि हैं। जीवात्मा और प्रकृति स्वयं सिद्ध हैं, फिर स्वामी जी ने आत्मा और प्रकृति का आदिमूल परमेश्वर क्यों कहा? इस सन्दर्भ में हमारा निवेदन है कि 'पदार्थ' शब्द सुनते ही यदि 'वैशेषिक दर्शन' उपस्थित हो जाए, तो ठीक नहीं है। क्योंकि यदि 'पुरुष' शब्द सुनते ही सर्वत्र सांख्य दर्शन उपस्थित हो गया तो पुरुष सूक्त के अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। सभा में एक हजार पुरुष उपस्थित थे, यहाँ सांख्य का पुरुष या पुरुषसूक्त का पुरुष नहीं है। वस्तुतः जिस शब्द का प्रयोग जिस अर्थ में किया गया है, उस अर्थ को खोजना ही बुद्धिमत्ता होती है। यह ऋषिदृक् होती है। मीमांसा दर्शन की भावना और किसी राजनेता की भावना को एक नहीं मान सकते। प्रथम नियम में पठित 'विद्या' शब्द और योगदर्शन का पारिभाषिक विद्या शब्द क्या एक ही अर्थ देंगे?.... जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उनका आदि मूल परमेश्वर है। यहाँ विद्या का अर्थ भौतिक विद्या भी हो सकता है। ज्ञान के विकास की बड़ी लम्बी यात्रा है। जिन अर्थों को वेद में देखा, उन पर अनुसन्धान हुआ तो भौतिक विज्ञान के मूल सन्दर्भ भी वेद में ऋषियों को दिखाई दिए और आधुनिक विज्ञान की यात्रा आरम्भ हो गई। इसी यात्रा का परिणाम यह पदार्थ विज्ञान है। इसलिए इस पदार्थ विज्ञान का मूल या भौतिक विज्ञान के बीज वेद में हैं और वेद ईश्वर की वाणी है, तो यह कहने में क्या विसंगति है कि जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उनका आदि मूल परमेश्वर है।

जो यह आक्षेप किया जाता है कि आत्मा और प्रकृति पदार्थों का आदिमूल परमेश्वर कैसे हो सकता है, वस्तुतः इसके तात्पर्यार्थ का अनुशीलन करेंगे तो यह भी समझ में

आ जाएगा कि परमेश्वर ही आत्मा और प्रकृति पदार्थों का आदिमूल है। विचार कीजिए कि यदि प्रकृति आदि पदार्थों के नियमन का आदि सामर्थ्य ईश्वर में नहीं, तो किसमें है? इस ब्रह्माण्ड का नियन्ता कौन है? जीवात्मा किसके सामर्थ्य से जन्म ग्रहण करता है? ब्राह्मणग्रन्थों में निर्वचनों को कहने की विशेष रोचक शैली है। वेद में परमेश्वर को जाया भी कहा गया है। जाया का अर्थ है जननशक्तियाँ। गोपथकार का निर्वचन देखिए- ईश्वर ने संकल्प किया मैं अपने तपस् से सबको उत्पन्न करूँगा- **तद् यदब्रवीदाभिर्वा अहमिदं सर्वं जनयिष्यामि यदिदं किंचेति, तस्माज्जाया अभवन् तज्जायानां जायात्वं यच्चासु पुरुषो जायते** (गोपथब्राह्मण-१.१.२)। प्रजा अर्थात् प्राणिजगत, लोक, सब नक्षत्रादि की उत्पत्ति ईश्वर के सामर्थ्य से ही होती है। जाया का निर्वचन यह कर लीजिए-**जायन्ते यस्यां ज्योतींषि, अपत्यानि च सा जाया ईश्वरस्य जननशक्तिः, पत्नी चेति।** वह पत्नी जाया इसलिए कहलाती है कि उसमें सन्तान उत्पन्न होती है या सन्तानोत्पत्ति का सामर्थ्य है। परमेश्वर भी इसलिए जाया है कि उसमें भी सब लोक लोकान्तरों को उत्पन्न (मूलप्रकृति से आविर्भूत) करने का सामर्थ्य है। सत्यार्थप्रकाश (अष्टम समुल्लास) का यह प्रसंग देखिए-

जिस परमात्मा की रचना से ये सब पृथिव्यादि भूत उत्पन्न होते हैं....वह ब्रह्म है उसके जानने की इच्छा करो।

जन्माद्यस्य यतः (शारीरकसूत्र-१.१.२),

जिससे इस जगत् का जन्म, स्थिति और प्रलय होता है, वही ब्रह्म जानने योग्य है।

प्रश्न- यह जगत् परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वा अन्य से?

उत्तर- निमित्त कारण परमात्मा से उत्पन्न हुआ है।

इस दृष्टि से ईश्वर ही सबका मूल है। दूसरी बात यह है कि क्या कोई पदार्थ ज्ञान दे सकता है, नहीं। क्योंकि पदार्थ तो जड़ हैं। अतः जड़ पदार्थ कैसे किसी को ज्ञान दे सकते हैं।

इस प्रकार आर्यसमाज के प्रथम नियम में ऋषि ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि एक विद्या वह है जो परब्रह्म प्राप्ति के लिए है और दूसरी वह भी विद्या ही है, जिससे पदार्थ विज्ञान को जाना जाता है। इसलिए सब सत्यविद्या अर्थात् सम्पूर्ण शाश्वत विद्या और व्यावहारिक वा भौतिक विद्या जिससे पदार्थ विज्ञान होता है, इनका स्रोत वेद होने से ईश्वर ही आदि मूल है । पदार्थ विज्ञान के अनेक मूल अर्थात् आधार हैं। मैंने जिस आचार्य से इस विज्ञान को जाना वह आचार्य मेरा मूल हुआ, दूसरे विद्यार्थी का मूल दूसरा आचार्य है। इस पदार्थ ज्ञान का मूल सबका अलग-अलग हो सकता है। किन्तु मूलों का मूल अर्थात् आदि मूल तो परमेश्वर ही है।

आइए, अब प्रथम नियम में पठित 'पदार्थ' का अर्थ वैशेषिकोक्त छः पदार्थ भी मान लेते हैं- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष और समवाय। तब भी क्या हानि है। वैशेषिक में द्रव्य माने गए हैं- पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, दिक्, काल और आत्मा (जीवात्मा और परमात्मा)। इन पदार्थों को जानने का माध्यम क्या विद्या नहीं है और इस पदार्थ विद्या का भी मूल अधिपति क्या ईश्वर नहीं है। आदि मूल का अर्थ उत्पत्तिकर्ता या उत्पत्तिस्थल ही नहीं होता। क्या स्वामी जी के साहित्य में कोई ऐसा सन्दर्भ मिला है, जिसमें यह ध्वनित हो कि प्रकृति और जीवात्मा को ईश्वर ने उत्पन्न किया है, फिर यह प्रकल्पना कैसे सम्भव है कि स्वामी जी ने प्रथम नियम में जीव और प्राकृति का उत्पत्तिकर्ता ईश्वर को माना है । ईश्वर, जीव, प्रकृति आदि सब तत्त्वों को जानने का आधार मनुष्य के पास वेदादि शास्त्र हैं और वैदिक ज्ञान का मूल अर्थात् आश्रय ईश्वर ही है। वेद से ही स्मृतिरूप में विविध विद्याएँ निस्सृत हुई हैं। भर्तृहरि का वचन स्मरण कीजिए-

स्मृतयो बहुरूपाश्च दृष्टादृष्टप्रयोजनाः।
तमेवाश्रित्य लिंगेभ्यो वेदविद्भिः प्रकल्पिताः।।

(वाक्यपदीय-१.७)

इसलिए यह प्रतिज्ञा भी सर्वथा निर्दुष्ट है कि जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उनका आदिमूल परमेश्वर है। आचार्यों का तात्पर्य केवल विषय का समझाना ही नहीं होता, बल्कि गूढ़ार्थ को इंगित करना और स्पष्ट करना भी होता है। पाणिनि के **विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्** (पा. ३.३.१६१) सूत्र में नागेश आदि ने यही विचार किया है कि 'प्रवर्त्तनायां लिङ्' इतने मात्र से भी काम चल सकता था, किन्तु आचार्य यहाँ विधि आदि विशिष्ट अर्थों को बताना चाह रहे हैं, इसलिए यह लम्बा सूत्र लिखा है। यही बात आर्य समाज के नियम में भी समझनी चाहिए कि स्वामी जी सत्य विद्या और विद्या शब्दों से किसी विशिष्ट अर्थ को कहना चाहते हैं। अतः दो बार विद्या शब्द सुनते ही पुनरुक्त दोष मानना असंगत है। अनुवाद और अभ्यास के अन्तर को आचार्य सत्यजित् ने सप्रमाण स्पष्ट कर ही दिया है। द्विरुक्ति गुण भी है। क्या यमक अलंकार में पुनरुक्त दोष है? यह पंक्ति देखिए- जीना उसका जीना है,

जो औरों को जीवन देता है। क्या यहाँ पुनरुक्त दोष है?

(घ) आदि मूल परमेश्वर - यह तो प्राय: स्पष्ट हो ही गया है कि विद्याप्राप्ति या पदार्थ-विज्ञान अथवा शाश्वत विद्या हमें भले ही किसी आचार्य के माध्यम से मिली हो, पर लोक में प्रसृत सारे ज्ञानविज्ञान या विद्या का आधार 'वेद' है। हमारी ज्ञान प्राप्ति का मूल अर्थात् आधार अनेक आचार्य हो सकते हैं, किन्तु उस ज्ञान के स्रोत का अनुसन्धान करेंगे, तो श्रुतिसरिता के मन्त्रनीरों में स्नान करना ही पड़ेगा और ऐसे मन्त्रनीर को प्रवाहित करने वाला तो ईश्वर ही है। इसलिए परमेश्वर ही आदिमूल है।

विद्याओं और पदार्थों का आदि मूल परमेश्वर को मानकर ऋषि दयानन्द ने वैदिक दर्शन की मूल स्थापना का उद्घोष भी पहले ही नियम में कर दिया है। यह स्पष्ट करना बड़ा आवश्यक था कि आर्यसमाज परमेश्वर को स्वीकार करता है, वह भी विद्या के प्रथम स्रोत के रूप में। इससे यह सिद्धान्त भी ध्वनित हो गया कि 'वेद' ईश्वर की वाणी है। इसकी तुलना इस योगसूत्र से कीजिए कि **स एष: पूर्वेषामपि गुरु: कालेनानवच्छेदात्** (योगसूत्र-१.१६) गुरुओं के गुरु ईश्वर को आदि मूल कहने में कैसी विसंगति।

यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि ज्ञान का प्रकाश भाषा के बिना सम्भव नहीं है। वैयाकरण मानते हैं कि जैसे अग्नि का स्वरूप प्रकाशत्व है और आत्मा का स्वरूप चैतन्य है, वैसे ज्ञान का स्वरूप वाग्रूपता है। यदि वाक् न हो तो प्रकाश ही नहीं रहेगा-

वाग्रूपता चेन्निष्क्रामेदवबोधस्य शाश्वती।
न प्रकाश: प्रकाशेत सा हि प्रतयवमर्शिनी।।

- वाक्यपदीय-१.१२४।।

अब विचार कीजिए कि वाक् का दाता कौन है। भाषावैज्ञानिक तो अभी तक यह निर्णय नहीं दे पाए कि वाक् की उत्पत्ति कैसे हुई, पर ऋषि दयानन्द ने वेद की नित्यता का प्रतिपादन करके भाषा विज्ञान की अनेक समस्याओं का समाधान कर दिया है। यदि वेद का दाता ईश्वर है, तो भाषा का दाता भी ईश्वर ही होगा। स्वामी जी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में कहते हैं- **यथास्मिन्कल्पे वेदेषु शब्दाक्षरसम्बन्धा: सन्ति तथैव पूर्वमासन्नग्रे भविष्यन्ति च। कुत:, ईश्वरविद्याया नित्यत्वादव्यभिचारित्वाच्च** (वेदानां नित्यत्वविचार:)। इस प्रकार ज्ञान का प्रथम साधन भाषा है और भाषा ईश्वरीय देन है। अत: सब प्रकार के ज्ञान का आदिमूल तो ईश्वर को मानना युक्त है।

आर्यसमाज के प्रथम नियम में ऋषि दयानन्द ने सत्य विद्या और विद्या के विभेद द्वारा अनेक ज्ञानदिशाओं का संकेत कर दिया है। इसके साथ ही उन्होंने ईश्वर की सत्ता का प्रतिपादन भी कर दिया है तथा द्वितीय नियम में स्वामी जी ने ईश्वर का स्वरूप प्रदर्शित किया है। आर्य समाज के नियमों में ऋषि दयानन्द की शैली पर वैदिक प्रभाव है, चाहे वह भाषा हो या भाव । हमें श्रद्धापूर्वक जिज्ञासाभाव से प्रश्न पूछने ही चाहिए। ऋषिवाक् की उदात्त व्यापकता का अनुभव उनके साहित्य में डूबने पर ही हो पाएगा।।

अध्यक्ष संस्कृत विभाग तथा अध्यक्ष, दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

दक्षिण भारत में बलिदान परम्परा के पच्चहत्तर वर्ष

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋषि के बलिदान समारोह के अवसर पर दक्षिण भारत में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करते हुए जिन हुतात्माओं ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया, उनका पुण्य स्मरण किया जायेगा।

दक्षिण भारत में निजाम के अत्याचारों की भट्टी में जो शहीद हुए उनमें प्रमुख हैं-

श्री भीमराव पटेल, माता गोदावरी देवी, श्री कृष्णराव विकेकर, श्री काशीनाथ धारूर, श्री गोविन्द राव घाडेलाली इन सभी को जिन्दा जलाया गया। अनेकों का जेल में बलिदान हुआ, इनमें भाई श्यामलाल जी, श्री धर्मप्रकाश जी, आर्यनेता पं. नरेन्द्र जी आदि प्रमुख थे, इन महानुभावों का इस अवसर पर पुण्य स्मरण किया जायेगा। परोपकारी में इन बलिदानियों के संस्मरण प्रकाशित होंगे।

सभी आर्यजनों से निवेदन है कि अपनी-अपनी समाजों में, आर्यसमाज के इतिहास व बलिदानी वीरों की साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर चर्चा करें। अपने इतिहास बलिदानों का स्मरण रखने वाला समाज ही अपने को जीवित रख पाता है।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१८५. श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६. मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७. योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८. ध्यान (सी.डी.)	
१९९. योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०. ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३. सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४. वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१९९. महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००. महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201. The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202. Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203. A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204. An Examination of Vallabha Sect	20.00
205. Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206. Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207. Bhranti Nivarana	35.00
208. **Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209. Bhramochhedan	5.00
210. Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211. Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212. Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213. Dayanand and His Mission	5.00
214. Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५. पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६. जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	श्री गजानन्द आर्य	
२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
	डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
	सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
	डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
	आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००
	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
	श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
	विविध ग्रन्थ	
२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

उदयवीर की अन्तर्ज्वाला

आचार्य उदयवीर जी का पुण्य स्मरण

– राजेन्द्र जिज्ञासु

उदयवीर थे खान गुणों की, उदयवीर गुणियों का गान।
उदयवीर विद्वान् मनीषी, उदयवीर जी ऊहावान्।।
उदयवीर गम्भीर विचारक, उदयवीर नरनामी योद्धा।
उदयवीर जी मूल तपस्वी, उदयवीर जननी की शान।।
भगतसिंह[१] यशपाल[२] सरीखे, भारत माँ को लाल दिये।
दुर्गादेवी[३] देन आपकी, वोहरा[४] अरमानों की तान।।
कौन गिने और कौन गिनावे? क्या–क्या कर्म किये निष्काम।
जप तप संयम भूषण जिनके, त्याग तपस्या का परिधान।।
मौलिक चिन्तन, पैनी दृष्टि, सतत साधना की अविराम।
विनय वीरता की प्रतिमा थे, जीत चुके विद्या अभिमान।।
देश धर्म हित क्या–क्या कीन्हा, कौन बताने वाला आज?
परहित जलना, घुलना, जीना, यही आपकी थी पहचान।।
शिशु शची[५] के पालन का, इतिहास अनूठा क्या कहना।
उदयवीर सा भारत माँ को, मिला निराला क्या वरदान।।
नदियाँ जंगल पर्वत चीरे, ऋषिकेश पहुँचाया कैसे।
दुर्गा टण्डन[६] भी क्या कहते, रोम रोम करता गुणगान।।
कृषि कार्य तज घर से निकले, सुख सुविधा को वार दिया।
विद्या व्यसनी वेदाभिमानी, लहरे लेते थे अरमान।।
वेदानन्द की खोज परख पर बलिहारी सब बुद्धिमान्।
धन्य धन्य विज्ञानानन्द जी, सफल हुआ उनका विज्ञान।।
नमन हमारा 'जिज्ञासु' उस पावक प्रेरक जीवन को।
खोज निराली, सूझ निराली, मन्द मन्द उनकी मुस्कान।।
ज्ञान पिपासु ऐसा मिलना, अति कठिन इतिहासों में।
पुलकेशन पर चर्चा सुनकर दंग हुए सारे विद्वान्।।
अन्तिम क्षण तक सत्यान्वेषण, ज्ञान ध्यान में लीन रहे।
धन्य हुई यह भारत जननी, पाकर ऐसा गुणी सुजान।।
उदयवीर का दर्शन क्या है? उदयवीर की अन्तर्ज्वाला।
'तोहफा'[७] का उपहार अनोखा, 'पूर्णकाम'[८] गायत्री ज्ञान।

टिप्पणियाँ

१, २, ३, ४ वीर भगतसिंह, यशपाल, दुर्गादेवी, भगवती चरण वोहरा आदि क्रान्तिकारियों के नाम।
५. दुर्गा जी को इकलौता पुत्र शची।
६. क्रान्तिकारी।
७, ८ आचार्य जी की माता तोहफा देवी तथा पिता चौ. पूर्णसिंह की ओर संकेत है।

– वेद सदन, अबोहर, पंजाब–१५२११६

तुम हिन्दू हो या आर्य?

पिछले अंक का शेष भाग....

टिप्पणी– महर्षि दयानन्द ने जाति को गौरवान्वित करते हुए यह बताया कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। ऋषि के बलिदान के कुछ ही समय के पश्चात् काशी के नामी पण्डितों ने ऋषि के इस कथन की पुष्टि करते हुए यह सर्वसम्मत व्यवस्था दी कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं।

हिन्दू नाम परकीय लोगों का दिया हुआ है। काशी के दर्जनों शीर्षस्थ पण्डितों की इस सर्वसम्मत व्यवस्था की विश्वनाथ मन्दिर की शिला से भी होती है। वहाँ भी आर्येतर का प्रवेश निषिद्ध है।

इस व्यवस्था को ध्यान में रखकर पारसियों ने माँग की थी कि यदि आर्य नाम को अपनाया जावे तो हम भी आर्यों में मिलने को तैयार हैं परन्तु हिन्दू महासभा ऐसा साहस न कर सकी। स्वामी वेदानन्द जी की पुस्तिका में यह प्रमाण मिल सकता है।

जो लोग यह तर्क देते हैं कि सिन्धु से हिन्दू बन गया वे बतायें कि सिन्धु तो फिर भी सिन्धु ही रहा। फारसी शब्द में भी 'स' अक्षर से अनेक धातु तथा सहस्रों शब्द फ़ारसी शब्द कोश में मिलते हैं अत: 'स' से 'ह' बन जाता है– यह सारहीन कुतर्क है। काशी के पण्डितों की यह व्यवस्था आँखें खोलने वाली है।

आश्चर्य होता है कि अपने प्राचीन ग्रन्थों का प्रमाण न देकर हिन्दुत्वादी फारसी भाषा का सहारा लेते हैं। फ़ारसी का भी इन्हें ज्ञान नहीं है।

– प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

[८]

॥ दोहा ॥

काफिर को हिन्दू कहत यूं सो भाषामाहिं।
ताते हिन्दू नाम यह उचित्त कहो नाहिं ॥ १ ॥

यह सम्पति काशी के सब प्रसिद्ध २ पण्डितों नें सं० १७९२ शाके शालिवाहन अनुसार सं० १९२७ वि० अनुसार सन् १८७० ई० में दीथी ऊपर जो सूचि दीगई है उसमें वह सब नाम युक्तहैं जिनकी संस्कृत योग्यताके पौराणिक दुनियां में डंके बज चुके हैं।

बाबाशास्त्री, शिवारामभट्ट, राजारामशास्त्री, बालशास्त्री ताराचरणतर्कालंकार आदिके नामदेखकर कौनसापौराणिकविद्वानहैं जोकेइस सम्पतिपत्रके आगेअपनाशिरनझुकावेगा और फिर यह संमति पत्र किसी निद्राके समयमें नहीं लिखागयाथा बल्किउससमय लिखागयाथा जबके महर्षी स्वामि दयानन्दजी महाराज अपने सिंहनादसे भारतवर्षको जगाचुकेथे औरकाशी के समस्त प्रसिद्ध पण्डितों के साथ जिनमें इस व्यवस्थापत्रपर सम्मति करने वाले प्रायः सबपं० सम्मिलितथे एकबड़ा शास्त्रार्थभी कराचुकेथे। यह प्रसिद्ध

शास्त्रार्थ कार्त्तिकसुदी१२ सं० १९२६ वि० को हुआ और
उक्त व्यवस्था पत्र सं० १९३७ में दिया केवल यही नहीं
परन्तु इसव्यवस्थापत्रके ११ वर्ष बादतक महर्षिदयानन्द
बराबर हिन्दूशब्दका खण्डन करते रहे परन्तु किसी
काशी के पण्डितों नेभी अपनी संमति बदलने का
ध्यान तक प्रकट नहीं किया और इस से भी बढ़कर
यह कि मरते दमतक अर्थात् ८ मई १८९९ ई० स्वा-
मिविशुद्धानन्द ने अपनी सम्मति बदलने का कुछभी जिक्र
नहीं किया। अब क्या इन पुष्ट सम्मतिओं की उपस्थिति
में हिन्दू शब्दको संस्कृत विद्या से निकला हुआ। सिद्ध
करने का प्रयत्न यदि कोई करे तो उसकी अवस्था वास्त
विक दया योग्य नहीं है!

[नोट] उसी वक्त वहां के प्रसिद्ध २ मन्दिरों पर
यह शब्द लिखदिये गयेथे-"आर्यधर्मेतराणां प्रवेशो निषिद्धः
जो आर्य धर्म से इतर हैं वह इस मन्दिर में प्रवेश न करें।
फिरभी हमारे वर्त्तमान सनातनधर्मी हिन्दु शब्दको सिद्ध
और आर्य शब्द का खण्डन करेंगे॥

[७]

॥ ओ३म् ॥

श्री १०८ स्वामी दयानन्दजी कृत पुस्तकें ॥

यजुर्वेद भाष्य १६)	हवन मन्त्र)।
चारों मूल वेद ९)	नियमोप नियम)।
अनुक्रमणिका १॥)	आर्यो देश्य रत्नमाला)।
दशों उपनिषद्मूल ॥=)	पञ्चमहायज्ञ विधिः —॥)
ऋग्वेदादि भाष्य—	वर्णोच्चारण शिक्षा)॥।
भूमिका संस्कृत —॥)	संस्कृत वाक्य प्रबोध =)
सत्यार्थ प्रकाश १॥)	अष्टाध्यायी ।)
संस्कार विधि ॥)	सन्धि विषय ।—)
आर्याभिविनय ≡)	वेदान्तध्वान्तिनिवारण —)
ऋग्वेदादि भाष्य भूमि—	यजुर्वेद भाषा भाष्य २।)
का संस्कृत भाषा १।)	वेदाङ्ग प्रकाश सम्पूर्ण ४।)
गोकरुणानिधिः ⁄,	श्रीमान् पं० तुलसीरामजी—
व्यवहारभानुः =,	कृत पुस्तकें—

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ३१ अक्टूबर तथा १-२ नवम्बर, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है - महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३१वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - २७ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २ नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. वागीश, मुम्बई** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तरराष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ३१ अक्टूबर, १-२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ३१ अक्टूबर को परीक्षा एवं १ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१४ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३१ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्-आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी जी-शिवगंज, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	**धर्मवीर**	**ओम मुनि**
प्रधान	**कार्यकारी प्रधान**	**मन्त्री**

जिज्ञासा समाधान – ७२

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा – परोपकारी आर्यसमाज की सबसे श्रेष्ठ पत्रिकाओं में है। इसकी सभी सामग्री ग्राह्य होती है। सम्पादकीय, तड़प-झड़प, आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण, जिज्ञासा-समाधान ये लेख बड़े ही ज्ञानप्रद होते हैं।

मेरी ध्यान में रुचि है, जप करता रहता हूँ, किन्तु जप, ध्यान से अभी तक विशेष उपलब्धि नहीं हुई है।

कृपया बतावें कि जप किस प्रकार किया जाये, जप कि विधि क्या है?

- विमलेश आर्य, सतना, म.प्र.

समाधान- जप, उपासना, ध्यान हमारा अच्छे प्रकार हो सके इसके लिए हमें अपने व्यवहार को सावधानी पूर्वक ठीक करना, रखना होता है। जितना अच्छा व्यवहार हमारा होगा उतना ही अच्छा हमारा जप, उपासना, ध्यान भी होगा।

हमें जब कभी किसी काम में सिद्धि नहीं मिल रही होती तब वहाँ या तो क्रिया दोषपूर्ण अथवा कर्ता वा साधन में दोष है। यदि ये तीनों ठीक हैं तो हमें कार्य सिद्धि होगी। अनेक बार कर्ता (साधक) ठीक व साधन ठीक होते हुए यदि क्रिया ठीक नहीं हो रही तो सफलता नहीं मिलती, इसीप्रकार यदि साधक व क्रिया ठीक है किन्तु साधन उचित नहीं है तो भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती और क्रिया व साधन ठीक हैं किन्तु कर्ता (साधक) ठीक नहीं तो भी कार्य सिद्धि नहीं हो सकती। इसलिए कार्य सिद्धि के लिए इन तीनों का दोष रहित होना आवश्यक है।

कर्ता हम स्वयं हैं, साधन हमारा यमनियामादि धर्मपूर्वक व्यवहार है और क्रिया जप समय हमारी क्या गतिविधि रहती है।

संसार में कोई भी सुख निःशुल्क नहीं मिलता हमें शुल्क अवश्य चुकाना पड़ता है। चाहे वह सुख भौतिक हो वा आध्यात्मिक। इसे यूँ समझें कि कोई व्यक्ति एक हजार रुपये लेकर बाजार जाता है, वह उन रुपयों से अच्छी वस्तु भी खरीद सकता है और बुरी वस्तु भी खरीद सकता है। यह उसके विवेक पर निर्भर करता है कि वह क्या खरीदे। इसीप्रकार जो व्यक्ति अच्छे कर्म करके पुण्य अर्जित किये हैं वह उस पुण्य से संसार का सुख भी ले सकता है और अध्यात्म का सुख भी ले सकता है। यह भी उसके विवेक पर निर्भर करता है कि वह कौनसा सुख ले। संसार में जिसके पास जितना अधिक धन वह उतना अधिक सामान ले सकता है, ठीक इसीप्रकार जिसके पास जितना अधिक पुण्य वह उतना अधिक सुख ले सकता है। जब संसार का सुख बिना पुण्यों के नहीं मिल सकता तो, अध्यात्म का सुख बिना पुण्यों के क्यों कर मिल सकता है? इसलिए साधना, ध्यान, जप को बढ़ाने के लिए हमें सदा अपने को सुरक्षित रखते हुए उनको बढ़ाना होगा।

जप की विधि के लिए शास्त्र कहता है **'तज्जपस्दर्थभावनम्'** उसका जप और उसके अर्थ की भावना अर्थात् जब हम ओ३म् आदि का जप कर रहे होते हैं उस समय ओ३म् के अर्थ का विचार व उस अर्थ के साथ भावना का होना, यह पूर्ण जप होगा। केवल ओ३म् आदि की आवृत्ति मात्र जप नहीं है।

यह जप आप प्रारम्भ में बोलकर कर सकते हैं, इसका कुछ अभ्यास होने के बाद मात्र ओष्ठ तक ध्वनि रखते और इसका भी अभ्यास होने पर मानसिक जप करना होता है। इसमें ओ३म् आदि का निरन्तर मानसिक उच्चारण, जिसमें वाक् इन्द्रिय का व्यापार नितान्त हट जाता है। ओ३म् का मानसिक उच्चारण के साथ प्रणव के अर्थ का निरन्तर चिन्तन करते रहना। ओ३म् का वाच्य अर्थ परमात्मा है उसके स्वरूप को ध्यान से न हटने देना- उसका चिन्तन है। यह स्थिति प्राप्त होना यद्यपि कठिन है किन्तु दीर्घकाल अभ्यास से इसका आभास होने लगता है। तब वह स्थिति साधक को निरन्तर अपने ओर खिंचती रहती है।

हम चाहने लगते हैं कि यह स्थिति बराबर, लगातार बनी रहे। अभ्यास के प्रारम्भ काल में मन का एक मिनट भी रुकना कठिन होता है। ध्यान के लिए बैठते ही अभ्यस्त जीवन के अनेक विचार, संस्कार हमारे सामने उभरकर आ जाते हैं। धीरे-धीरे उनको हटाते हुए ओ३म् का जप विधिपूर्वक करते रहना अपेक्षित होता है।

जप के समय परमात्मा के विशुद्ध स्वरूप को अपने सामने अवश्य रखे रहना चाहिए। जैसे ओ३म् का अर्थ रक्षक है अर्थात् परमात्मा सबका रक्षक है। परमात्मा के इस रक्षक स्वरूप को अपने मन में निश्चिय पूर्वक स्थापित करना चाहिए अर्थात् हमारे मन की स्थिति संशय रहित होवे परमात्मा के रक्षक स्वरूप को लेकर। दृढ़ निश्चय हमारे मन में यह होना चाहिए कि परमात्मा ही रक्षक है

परमेश्वर जैसा रक्षक अन्य कोई नहीं। इस प्रकार निश्चय पूर्वक जो जप किया जाता है वह जप फलदायक होता है।

जो साधक गायत्री आदि का जप एक लाख, सवा लाख, करोड़ आदि करते हैं उनका जप बिना अर्थ और भावना के निष्फल है। वह तो मात्र रटन्त विद्या जैसा है। तोते की तरह घोकना मात्र है। हाँ, यदि ये साधक अर्थ भावनापूर्वक एक बार भी ओ३म् गायत्री आदि का जप करते हैं, उसके अर्थ के साथ तल्लीन हो जाते हैं तो उनका यह जप परम शान्ति देने वाला सिद्ध होगा। जप में संख्या का महत्त्व नहीं है, महत्त्व तो अर्थ भावना का है।

साधक जप के लिए अपनी दैनिक चर्या में निश्चित समय को महत्त्व अवश्य दे। अपना नित्यकर्म करके जप का समय निर्धारित रखे, जप से पहले अपने सभी आवश्यक कार्यों को अवश्य निपटा लेवे अन्यथा जप में बाधा आयेगी। जप के लिए दोनों समय निर्धारण कर ले और नियत समय पर जप करे। निर्धारित समय के अतिरिक्त भी यदि जप की इच्छा हो और अन्य आवश्यक कार्य हमारे पास न हों तो अन्य समय भी जप किया जा सकता है। इससे हमारे अन्दर मन को एकाग्र करने की योग्यता बढ़ती जायेगी।

जप के लिए शान्त एकान्त स्थान को वरीयता देनी चाहिए। जप अनुष्ठान के लिए स्थान की अनुकूलता का बड़ा महत्त्व रखती है। इसलिए ऋषियों ने जप के लिए उत्तम स्थान नदी, तालाब का तट कहा है। महर्षि लिखते हैं–

अपां समीपे नियतो नैत्यकं विधिमास्थितः।
सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यं समाहितः।।

– मनु. २.१०४

''जंगल में अर्थात् एकान्त देश में जा, सावधान हो के, जल के समीप स्थित हो के, नित्य कर्म करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करे, परन्तु यह जप मन से करना उत्तम है।'' (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

यहाँ स्थान की दृष्टि से जल के समीप एकान्त देश को कहा है। जप करने वाले साधक को इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि वह अपने अतिरिक्त समय को व्यर्थ न जाने दे, उस समय में साधक सेवा, परोपकार और अध्यात्म सम्बन्धी शास्त्रों का अध्ययन पारायण अवश्य करता रहे। अपने समय को इधर-उधर के कार्य वा साहित्य के अवलोकन में नष्ट न करे। यदि ऐसा करता है तो वह अपने निर्धारित मार्ग से भटक सकता है, भटकने की सम्भावना अत्यधिक हो जाती है। सेवा, परोपकार, अध्यात्म ग्रन्थों का पर्यालोचन साधक के विचारों को इच्छित मार्ग के अनुकूल बनाये रखता है। ऐसा करने से शीघ्र आत्म लाभ होता है।

जप करते हुए उच्चारण के समय ही यदि अर्थ भावना को हम कर लेते हैं तो ये अच्छी स्थिति है। यदि उच्चारण के साथ अर्थ भावना नहीं कर पाते हों तो पहले उच्चारण कर लें उसके बाद अर्थ भावना बना लेवें ऐसा बार-बार करें यह जप की विधि है। ऐसा करते हुए बीच-बीच में अपना निरीक्षण अवश्य करते रहें कि मैं कितनी देर तक जप में लगा रहा और कितनी देर तक बाह्य विषय में मन को लगाया, ऐसा करने से अपनी कमजोरी पकड़ में आयेगी। उस कमजोरी को पकड़कर उसे दूर कर सकते हैं। निरीक्षण करें कि जप करते हुए हम तनाव-खिचाव में तो नहीं हैं, यदि हैं तो दूर कर सामान्य स्थिति बनाने का प्रयास करते रहें। ऐसा करने से हमारा जप ठीक प्रकार से हो सकेगा। हमने इस विषय में काफी कुछ लिखा है। अब अलम्।

– ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे जल सांसारिक पदार्थों का शुद्धि का निदान है, वैसे विद्वान् लोग सुधार का निदान हैं।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.१७

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ सितम्बर २०१४ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ४. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ५. श्री विरदसिंह गंगासिंह भीनमाल, राज. ६. श्रीमती पुष्पलता अग्रवाल, जयपुर, राज. ७. आचार्या सुनीता, पानीपत, हरि. ८. श्री दक्ष सृष्टि सैनी, रोहतक, हरि. ९. श्री सत्यदेव आर्य, जोधपुर, राज. १०. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ११. श्री रंजन हांडा, नई दिल्ली १२. स्वास्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. १३. श्री भास्कर सेन गुप्ता, बेंगलूर, कर्नाटक।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ सितम्बर २०१४ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ३. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ४. सुश्री निकिता तनेजा, अजमेर ५. श्रीमती मीना चौधरी, गुरुग्रास, हरि. ६. श्री बलवान सिंह वैश्य, झज्जर, हरि. ७. श्री अशोक कुमार शर्मा, अजमेर ८. श्री राजेश त्यागी, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

पुस्तक - परिचय

पुस्तक का नाम - हिन्दुओं का भविष्य

लेखक - डॉ. हरिश्चन्द्र

प्रकाशक - रामलाल कपूर ट्रस्ट, ग्राम रेवली, सोनीपत-३९ (हरियाणा)

मूल्य - ५ रु. **पृष्ठ संख्या** - १६

सम्पूर्ण भारत वैदिक युग में आर्यावर्त कहलाता था। यहाँ जाति भेदभाव नहीं अपितु वेदों के अनुसार जीवन शैली थी। जीवन सुखी था, धनधान्य से परिपूर्ण था। भ्रातृत्व भाव से शासन प्रबन्ध था। महाभारत के बाद जातिवाद ने अपने पाँव पसारे। आज अनेक मत-मतान्तर हो गये हैं, उसी रूप में जातिवाद भी बन गया। आज मुगल, ईसाई, जैन, पारसी आदि में हिन्दू बँटता जा रहा है। मुगलों ने तलवार के बल पर ईसाइयों ने साम्राज्यवाद के आधार पर हिन्दुओं पर अनेक अत्याचार किए, इससे हिन्दुओं का भविष्य अन्धकारमय हो गया है। लेखक ने वैदिक धर्म की महत्ता के साथ हिन्दुओं के भविष्य पर चिन्तन किया है- मजहबों की उत्पत्ति, हिन्दू की परिभाषा, हिन्दुओं की विकृतियों के परिणाम, हिन्दुओं को निगलने वाली शक्तियाँ- एक ही रास्ता-वैदिक धर्मी बनना, वैदिक शरण में आने के उपाय आदि पर पूर्ण प्रकाश डाला है अर्थात् गागर में सागर। लघु पुस्तिका हृदयस्पर्शी है पुस्तक का सार प्रेरणादायी एवं हृदयग्राही है। लेखक का साधुवाद। हिन्दुओं को संगठित होना है तभी एकता की व बहुसंख्यक की कड़ी रहेगा अन्यथा अल्पमत के कगार पर। वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ है, इसी ओर लौटो।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

प. शिवकर बापूजी तलपदे

- श्री विजय प्रसाद उपाध्याय

विषय प्रवेश- आर्य समाज का तृतीय नियम है- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' सृष्टि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य के उपयोगी समस्त ज्ञान को बीजरूप में वेद के मन्त्रों के द्वारा प्रदान किया है। वर्तमान समय में वेद में स्थित विभिन्न विद्याओं का वर्गीकरण महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ''चतुर्वेद विषय-सूचि'' पुस्तिका में की है। उन्होंने विभिन्न विद्याओं का विस्तारपूर्वक वर्णन ''ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'' ग्रन्थ में किया है। ये विद्याएँ हैं- सृष्टिविद्या, गणितविद्या, तारविद्या, नोविमान विद्या आदि-आदि। इसके साथ ही वेदोक्त विद्याओं की व्याख्या यजुर्वेद एवं ऋग्वेद (७ मण्डल, ६२ सूक्त, २ मन्त्र तक) के भाष्य में भी किए हैं। वेद में सूक्ष्मरूप में वर्णित विज्ञान एवं शिल्प (Science & Technology) विषय का विस्तार अर्थवेद या शिल्पवेद है। यह अथर्ववेद का उपवेद है। महर्षि भृगु ने ''भृगुशिल्पसंहिता'' ग्रन्थ में वेदोक्त शिल्पविद्या को वर्गीकृत किया है। यह ३ खण्ड-१० शास्त्र-३२ विद्या एवं ६४ कला में विभक्त है।[१]

स्वामी दयानन्द कृत ''ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'' ग्रन्थ में वर्णित ''विमानविद्या'' का मुम्बई, महाराष्ट्र के पण्डित शिवकर बापूजी तलपदे ने अध्ययन किया। उन्होंने वेद के आधार पर विश्व का सर्वप्रथम ''विमान'' का निर्माण कर इसका प्रदर्शन ई. १८९५ में मुम्बई के चौपाटी पर किया था।

परिवार व वंश- शिवकर बापूजी तलपदे (१८६४-१७ सितम्बर १९१७) का जन्म १८६४ में मुम्बई में हुआ।[२] उनके पिता श्री बापूजी नारायण तलपदे थे। उनका निवास डुकरबाड़ी, चीराबाजार, गिरगाँव, मुम्बई में था।[३] शिवकर पाठारे प्रभु वंश से थे। पाठारे प्रभु समाज क्षत्रिय वर्ण से सम्बन्ध रखता है।[४]

शिक्षा- शि. बा. तलपदे ने अपनी प्राथमिक शिक्षा समाप्त करने के बाद सर जमशेद जी जिजीभॉय कला महाविद्यालय में लगभग १८८० में प्रवेश लिया।[५] वहाँ उनका परिचय गुरु श्री चिरंजीलाल वर्मा से हुआ। श्री चिरंजीलाल वर्मा कला महाविद्यालय में शिक्षक थे और साथ में एक पक्के आर्यसमाजी भी थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया हुआ था। उसी के आधार पर वह अपने विद्यार्थियों को शिक्षा देते-''वेद में समस्त प्रकार की विद्याएँ हैं, अत: भौतिक विज्ञान की भी सब विद्याएँ वेद में सूक्ष्म रूप में विद्यमान हैं।'' वे अनेक वेद मन्त्रों का उदाहरण प्रस्तुत कर वेदोक्त विद्याओं को प्रमाणित करके दिखाते भी थे। अपनी इन गतिविधियों के कारण वे युवाओं के बीच बहुत प्रसिद्ध थे। इसी क्रम में शि.बा. तलपदे को वेद में स्थित विमान विद्या के बारे में गुरु श्री चिरंजीलाल वर्मा से जानकारी मिली। युवा शिवकर के हृदय में विमानविद्या पर अधिक जानने की जिज्ञासा हुई। इसके लिए उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थों का अध्ययन आरम्भ किया।[६]

संस्कृत शिक्षा- सर जमशेद जी जिजीभॉय कला महाविद्यालय से अध्ययन समाप्त करने के बाद शि.बा. तलपदे का उसी महाविद्यालय में ही कला शिक्षक के रूप में नियुक्ति हुई। उस समय वे अध्यापन कार्य के साथ महाविद्यालय के प्रशासनिक कार्यों को भी देखते थे। यह समय लगभग ई. १८८५ का है।[५] इसके साथ गुरु श्री चिरंजीलाल वर्मा के प्रशिक्षण व मार्गदर्शन में आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करते रहे। श्री चिरंजीलाल वर्मा ने शिवकर व अन्य नवयुवकों को संगठित कर ई. १८८६ में ''वेदधर्म प्रचारिणी सभा'' का गठन किया। इस सभा का उद्‌देश्य वैदिक धर्म का प्रचार करना था।[७,८]

स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य का अध्ययन कर शिवकर ने भारतवर्ष की विस्मृत प्राचीन विमानविद्या को पुन: स्थापित करने हेतु प्रस्तुत हुये। उन्होंने वैदिक विमान विद्या में आगे शोध करने का संकल्प लिया और २५ वर्ष की आयु में शुद्ध रीति से संस्कृत सीखना आरम्भ किया।[२] इसके लिए वे स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्देशित आर्ष पठन-पाठन विधि के अनुसार वैदिक संस्कृत के व्याकरण ग्रन्थों (महर्षि पाणिनि कृत अष्टाध्यायी, महर्षि यास्क कृत निरुक्त, निघण्टु) का अध्ययन व अभ्यास किया।[६]

वेदार्थ प्रक्रिया और स्वामी दयानन्द- वैदिक काल में वेद मन्त्र के अनेक अर्थ करने की पद्धति थी। महर्षि यास्क ने ''निरुक्त'' ग्रन्थ में वेद मन्त्र के तीन प्रकार के

अर्थ (त्रिविधि भाष्य) करने की विधि बताई हैं। यह तीन प्रकार के अर्थ हैं-१. अधियज्ञ (यज्ञपरक), २. अधिदैविक (भौतिक या वैज्ञानिक), ३. अध्यात्म। उत्तर-वैदिक काल में वैदिक मूल्यों के पतन के साथ-साथ त्रिविधि भाष्य करने की वैदिक परम्परा भी लुप्त होती गयी। अर्वाचीन काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती इस लुप्त ''निरुक्त प्रक्रिया'' को पुनः प्रचलन में लाया एवं वेद का भाष्य करना आरम्भ किया।

निरुक्त प्रक्रियानुसार वैदिक भाषा में सब शब्द यौगिक हैं अर्थात् जो अर्थ धातु एवं प्रत्यय के मिलने से बनता है वही उसी शब्द का अर्थ होता है। इसीलिए वैदिक शब्द विभिन्न अर्थों का बोध कराते हैं। परन्तु मैक्समूलर, ग्रिफ्फिथ, कीथ आदि पाश्चात्य विद्वानों ने वैदिक शब्दों को रूढ़ मानते हुए एकार्थक माना है और वे इन शब्दों का रहस्य समझने में असमर्थ रहे हैं। इसी प्रकार सायण, महीधर आदि भारतीय आचार्यों ने वेदों का अर्थ करने में सभी मन्त्रों को केवल अधियज्ञ (यज्ञपरक) मानकर तदनुसार व्याख्या की है। उन्होंने वेद मन्त्रों के अधिदैविक (भौतिक या वैज्ञानिक) एवं अध्यात्म अर्थों की सर्वथा उपेक्षा की है।[९]

वेद अध्ययन- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने निरुक्त प्रक्रियानुसार अधिदैविक (भौतिक या वैज्ञानिक) एवं अध्यात्म अर्थों से वेदभाष्य किया। इस प्रक्रिया में सबसे पहले उन्होंने दो नमूना पुस्तिका ''वेद भाष्य के नमूने (प्रथम)'' एवं ''वेद भाष्य के नमूने (द्वितीय)'' की रचना की, जो क्रमशः ई. १८७५ व ई. १८७७ में प्रकाशित हुआ। इसके बाद चतुर्वेद अन्तर्गत विज्ञान एवं शिल्पविद्या विषय को ''ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'' ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। यह ग्रन्थ ई.१८७७ में प्रकाशित हुआ। पश्चात् सम्पूर्ण यजुर्वेद एवं ऋग्वेद के ७ मण्डल, ६२ सूक्त, २ मन्त्र तक का वेदभाष्य प्रकाशित हुए।

स्वामी दयानन्द कृत वेदभाष्य पर शि.बा. तलपदे की पूर्ण श्रद्धा व विश्वास था। वे स्वामी दयानन्द के द्वारा वेदमन्त्रों की व्याख्या को प्रमाणिक मानते थे। साथ ही निरुक्त प्रक्रियानुसार स्वयं वेद मन्त्र के शब्दों का अर्थ करके दिखाते थे। आवश्यकता पड़ने पर वेद मन्त्र के कुछ शब्दों को कई दिनों तक चिन्तन कर, उसके गूढ़ वैज्ञानिक अर्थ को स्पष्ट करके बताते थे।[६] शिवकर ने ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के अन्तर्गत नौ मन्त्रों की अधिदैविक (भौतिक या वैज्ञानिक) एवं अध्यात्म व्याख्या की है। उन्होंने इसे ''ऋग्वेद-प्रथम सूक्त व त्याचेअर्थ'' नामक मराठी पुस्तक में ई. १९०९ में प्रकाशित किया।[१०]

वेद में वर्णित विमानविद्या पर शोध- शि.बा. तलपदे के विमानविद्या पर शोधकार्य का मुख्य स्रोत वेद था। वेद में वर्णित विमानविद्या की जानकारी उन्हें उनके गुरु श्री चिरंजीलाल वर्मा के माध्यम से स्वामी दयानन्द सरस्वती की ''ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'' ग्रन्थ से मिली थी। इस ग्रन्थ के नौविमानादिविद्या प्रकरण में साधनखण्ड अन्तर्गत नौका, रथ एवं अग्नियानशास्त्र से सम्बन्धित ऋग्वेद के ११ मन्त्रों की विस्तारपूर्वक व्याख्या की गयी है। शि.बा. तलपदे ने इन्हीं मन्त्रों को आधार बनाकर पर अर्वाचीन समय का सर्वप्रथम विमान का निर्माण किया था।[६]

१- विमान का उपयोग एवं आकृति- शिवकर ने विमान व नौका उपयोग एवं उनकी आकृति का सिद्धान्त ऋग्वेद के निम्न दो मन्त्रों से प्राप्त किया।

तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः।
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभिरन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः।।१।।
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भिर्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः।२।

ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त, मन्त्रक्रमांक/अष्टक,
अध्याय, वर्ग, मन्त्रसंख्या=१.११६.३,४/१.८.८.३,४

इन मन्त्रों के कुछ विशिष्ट शब्दों का चिन्तन करने पर उन्हें विमान का उपयोग एवं आकृति के बारे में जानकारी मिली। ये शब्द हैं-

१. (अन्तरिक्षप्रुद्भिः) अर्थात् जिनसे आकाश में जाने-आने की क्रिया सिद्ध होती है, जिनका नाम विमान शब्द प्रसिद्ध है।

२. (पतङ्गैः) अर्थात् पतंग या पक्षी जैसे आकार का, जो घोड़े के समान वेग वाले हैं।

३. (नौभिः) अर्थात् समुद्र में सुख से जाने-आने के लिये अत्यन्त उत्तम नौका होती है।

इसका अर्थ हुआ - आकाश मार्ग से जाने के लिए विमान एवं जलमार्ग के लिए नौका का उपयोग करना चाहिए। यह पतंग या पक्षी आकार के होते हैं।[६]

२- विमान के यन्त्र- विमान को उड़ाने के लिए आवश्यक यन्त्र का ज्ञान उन्हें निम्न मन्त्र से मिला।

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः।

ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त. मन्त्र क्रमांक/अष्टक.
अध्याय. वर्ग. मन्त्रसंख्या=१.१६४.४८/२.३.२३.२

इस मन्त्र में विमान में लगने वाले यन्त्र का बोध करता शब्द है- (शङ्कवोऽर्पिताः) अर्थात् शंकु जैसा यन्त्रकला रचकर स्थापित करना।[६] यह यन्त्र ऐसा होना चाहिए कि जब विमान को ऊपर चढ़ाना हो तब भापघर के ऊपर के मुख बन्द रखने चाहिए और ऊपर से निचे उतरना हो तब ऊपर के मुख अनुमान से खोल देने चाहिए। ऐसे ही जब पूर्व को चलाना हो तो पूर्व के बन्द करके पश्चिम के खोलने चाहिए और जो पश्चिम को चलाना हो तो पश्चित को बन्द करके पूर्व के खोल देने चाहिए। इसी प्रकार उत्तर-दक्षिण में भी जान लेना।[११]

विमान का निर्माण- शि. बा.तलपदे ने ई. १८९२ में वेद मन्त्रों का व्यावाहारिक प्रयोग के लिए एक प्रयोगशाला (Workshop) स्थापित की। वह युग गुब्बारा (Balloon) का था। उस समय उन्होंने वेदमन्त्र के पतंग या पक्षीवाचक शब्द के आधार पर बताया कि विमान पक्षी आकार का होता है। इससे सम्बन्धित उनका एक लेख भी बहुत प्रसिद्ध हुआ।[६] शिवकर ने पहले तार का एक लघु (Prototype) विमान निर्माण किया। पश्चात् उन्होंने तार का ६ फूट लम्बा और लगभग ४ फूट चौड़ा पक्षी आकार का विमान निर्माण कर उसके मध्य में शंकुयन्त्र को स्थापित किया।[६] प्राचीन विमानविद्या पर उन्होंने जो अनुसन्धान कार्य किया उसे देशवासियों के लिए सुरक्षित रखने का विचार किया। इसके लिए शिवकर ने अपने शोधकार्य को तीन व्याख्यानों में प्रस्तुत किया। उसमें से प्रथम व्याख्यान का ''प्राचीन विमान कलेचा शोध-प्रथम व्याख्यान'' नामक मराठी पुस्तक के रूप में ई. १९०७ में प्रकाशित किया।[१२]

विमान प्रदर्शनी- शि.बा. तलपदे ने ई. १८९५ में मुम्बई महानगर के चौपाटी तट पर जनसमूह के सम्मुख वैदिक रीति से निर्मित अर्वाचीन काल का सर्वप्रथम ''मानवरहित विमान'' का परीक्षण किया। यह विमान एक निर्दिष्ट ऊँचाई तक उड़ान भरकर पुनः भूमि पर वापस आया, ऐसा प्रत्यक्षदर्शीओं का कहना था। परन्तु यह घटना आधिकारिक रूप से निश्चित नहीं हो पाई।[१३,१४] पाठारे प्रभु समाज के इतिहासकार श्री प्रताप वेलकर के अनुसार यह कार्यक्रम शिवकर के द्वारा व्यक्तिगत रूप से आयोजित था एवं इसके लिए अंग्रेज सरकार से पूर्व-अनुमति नहीं लिया गया था। इसी कारण इस घटना की कोई जानकारी सरकारी अभिलेखों (records)में नहीं मिलती है।[१५]

संदर्भ ग्रन्थसूची

१. हिन्दी शिल्पशास्त्रसार, श्री कृष्णाजी विनायक वझे, २०१३।

२. प्रभुमासिक (न्यू सीरीज) (मराठी), अक्टूबर, १९१७।

३. The Prabhu Street and Mofussil Directory 1903-04.

४. The Peoples Of Bombay, Percival & Olivia Strip, 1944.

५. Story Of Sir J J School Of Art (1857-1957), Dean, Sir J J School Of Art, Mumbai, 1957.

६. प्राचीन विमान विद्या (पूवार्ध), पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, केसरी, १० मई १९५३।

७. आर्यधर्म (मराठी), अक्टूबर १९०४।

८. मुंबई आर्यसमाजनो इतिहास (गुजराती), श्रीदामोदर सुंदर दास, १९३३।

९. वेदार्थ करने की विधि, प्रा. चंद्रमणि विद्यालंकार, गुरुकुलविश्वविद्यालय, काँगड़ी, १९१६।

१०. ऋग्वेद-प्रथम सूक्त वत्याचे अर्थ (मराठी), शिवकर बापूजी तलपदे, शामराव कृष्ण आणि मंडली, मुम्बई, १९०९।

११. ऋग्वेदादिकभाष्यभूमिका, स्वामी दयानन्द सरस्वती, १९१२।

१२. प्राचीन विमान कलेचा शोध (मराठी),शिवकर बापूजी तलपदे, १९०७।

१३. पंडित शिवकर बापूजी तलपदे यांचे पहिले भारतीय विमान-१८९५, पाठारे प्रभूंचा इतिहास (मराठी), श्री प्रताप वेलकर, १९९७।

१४. Sentinels Of the Sky, Air Headquarter, Indian Air Force, New Delhi, 1999.

१५. श्री प्रताप वेलकर (मुम्बई) से व्यक्तिगत साक्षात्कार में प्राप्त जानकारी अनुसार, २०१३।

क्रमशः.....

द्वारा-श्रीमती सुशीला उपाध्याय, नेहरु नगर,
डा. टिटिलागढ़, जि. बलांगिर, ओडिशा-७६७०३३
चलभाष- ०८०१०२५३५८०

संस्था - समाचार

१ से १५ सितम्बर २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय भी किया जाता है। दोनों समय प्रवचन/स्वाध्याय की व्यवस्था है। इन प्रवचनों, स्वाध्याय के क्रम में वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमश: विचार किया जाता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** ने मृत्यु सूक्त (ऋ. १०/१८) के मन्त्रों की व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि हम किसी वस्तु के प्रति एक दृष्टिकोण बनाकर उसे अच्छा या बुरा मान लेते हैं, लेकिन समष्टि रूप से विचार करने पर वह वस्तु/परिवर्तन संसार के लिए अपरिहार्य होता है। कुछ सफाई पसन्द लोगों की दृष्टि में संसार में सूअर नहीं होना चाहिए या कुछ लोगों के मन में साँप जैसे विषधारी जीव की हमें कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन क्या इन जीवों के बिना हमारा काम चल सकता है? नहीं। किसी परिवर्तन को हम अच्छा मानते हैं और किसी परिवर्तन को बुरा-किसी व्यक्ति के जन्म से लेकर युवावस्था तक के परिवर्तन जिसमें विकास होता है उसे हम अच्छा मानते हैं जबकि बाद का परिवर्तन जिसमें ह्रास होता है हमारी दृष्टि में उचित नहीं है। वस्तुत: परिवर्तन तो परिवर्तन है, यह संसार के लिए अपरिहार्य है। जब व्यक्ति इस दृष्टि से विचार करता है तो वह मृत्यु आदि परिवर्तनों में दु:खी नहीं होता।

इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।।

(ऋ. १०/१८/३)

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि जब व्यक्ति ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है तो मृत्यु के/दु:खों के कारण उससे दूर होने लगते हैं। ऐसा करने पर उस जीव का इहलोक व परलोक दोनों सुधर जाते हैं। उसे अपने अभीष्ट की प्राप्ति हो जाती है। मानो उसकी मनोकामना/याचना सुन ली गई है। इस प्रकार वह हंसी-खुशी श्रेष्ठ मार्ग पर चलकर अपने आयु को और अधिक बढ़ाता है।

प्रार्थना के प्रसंग में आपने बताया कि जब व्यक्ति अपने दु:खों को हटाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है तो उसे प्रार्थना पूरी करवाने के लिए पुरुषार्थ भी करना होता है। केवल अपनी इच्छा कहना प्रार्थना नहीं होती। यदि कोई किसान फसल चाहता है तो इसके लिए उसे समय पर खेत जोतना, खाद डालना, मेड़ बनाना, बीज डालना, पानी देना, बाड़ लगाना, खरपतवार हटाना, पकी फसल को ठीक समय पर काटकर घर लाना ही पड़ेगा। यदि वह ऐसा न कर केवल वाणी से प्रार्थना करता तो कभी भी उसे अभीष्ट की प्राप्ति नहीं होगी। इसीप्रकार एक याचक को भी ईश्वर से प्रार्थना करते समय पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा। यहाँ कोई कह सकता है कि इतना पुरुषार्थ करने के बाद ही प्रार्थना फलीभूत होती है तो यह पुरुषार्थ का फल हुआ न कि प्रार्थना का। इसका समाधान महर्षि के वचनों से करते हुए कार्यकारी प्रधान जी ने बताया कि प्रार्थना से हम में विवेक जागता है, अहंकार का नाश होता है और ईश्वरीय सहायता मिलती है।

ऋषि उद्यान साधना, स्वाध्याय के अनुकूल अपने वातावरण के कारण, जिज्ञासु ब्रह्मचारी व साधकगणों की उपस्थिति के कारण वैदिक विद्वानों को आकर्षित करता रहा है। डॉ. धर्मवीर जी, आचार्य सत्यजित् जी, स्वामी विष्वङ् जी, आचार्य सत्येन्द्र जी, आचार्य सोमदेव जी आदि वैदिक विद्वान्/वक्ता तो स्थायी तौर पर यहाँ रहते ही हैं, समय-समय पर आर्यजगत् के अन्य मूर्धन्य विद्वान् भी यहाँ पधारते रहते हैं। इसी क्रम में सम्प्रति आश्रमवासियों को आचार्य सनत्कुमार जी, स्वामी ध्रुवदेव जी, आचार्य सत्यव्रत जी, श्री सत्येन्द्र सिंह जी (मेरठ) का सान्निध्य भी प्राप्त हो रहा है।

सायंकालीन सत्संग में ऋषिवर के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय चल रहा है। मेरठ से पधारे **श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य** स्वाध्याय के इस क्रम का संचालन कर रहे हैं। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका के अध्ययन के समय श्री आर्य ने प्राच्य विद्या के अध्ययन में रुचि रखने वाले योरुपीय विद्वानों के उस अभिमत की ओर ध्यान आकृष्ट किया जिसमें उन्होंने सत्यार्थप्रकाश को सर्वोत्कृष्ट कृति कहकर इस ग्रन्थ के महत्त्व को स्वीकार किया है। ग्रन्थ की भूमिका में ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने चौदहों समुल्लासों की विषय वस्तु का स्पष्टत: उल्लेख करते समय यह दृढ़तापूर्वक कहा है कि सत्य अर्थ का

प्रकाश करना ही ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है। ऋषि की दृष्टि में विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों को सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का त्याग करके सर्वदा आनन्द में रहें। मनुष्य का हित सत्य को स्वीकार करने में है। प्रत्येक मनुष्य सत्य-असत्य को जानता, समझता है परन्तु अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह, स्वार्थ आदि के कारण असत्य की ओर झुक जाता है। यही दु:ख का कारण है।

ऋषिवर ने प्रथम समुल्लास में ईश्वर के निज नाम **'ओ३म्'** की संक्षिप्त व्याख्या करके कहा कि परमेश्वर के गुण अनन्त हैं, इसलिए उन-उन गुणों की अभिव्यक्ति के लिए नाम भी अनन्त हैं। स्वामी जी ने प्रथम समुल्लास का आरम्भ ही उस मन्त्र से किया है जिसमें मित्र, वरुण, अर्य्यमा, इन्द्र, बृहस्पति, विष्णु, उरुक्रम- ईश्वर के सात नाम आये हैं। इन नामों से ईश्वर का स्मरण करते हुए शान्ति की प्रार्थना की है। ईश्वर को अन्तर्यामी रूप से साक्षात् ब्रह्म मानते हुए ऋषि ने तैत्तरीय आरण्यक के प्रमाण से घोषणा की है कि वे इस ग्रन्थ में **'ऋतं वदिष्यामि'** अर्थात् जो ईश्वर की वेदस्थ यथार्थ आज्ञा है उसी का सबके लिए उपदेश करूँगा और आचरण भी करूँगा। **'सत्यं वदिष्यामि'** सत्य ही बोलूँ, सत्य मानूँ और सत्य ही करूँगा।

इस ग्रन्थ में मानव जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी उपदेशों की ओर श्री आर्य ने विभिन्न उदाहरण एवं दृष्टान्त देकर बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया। साथ ही यह भी कहा कि यह एक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक ग्रन्थ है। अत: इसका स्वाध्याय मनोयोग पूर्वक किया जाना चाहिए।

इसी क्रम में **आचार्य सनत्कुमार जी** ने धर्म की व्याख्या की। आपने बताया कि धर्म और कुछ नहीं जीवन जीने का विज्ञान है। इसे 'वैदिक जीवन विज्ञान' भी कहा जा सकता है। जीवन की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि शरीर, आत्मा, इन्द्रियाँ और मन का संयोग ही जीवन है।**'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'** जैसा व्यष्टि में है वैसा ही समष्टि में भी है- जीवन भी अग्निहोत्र की ही तरह है। जैसे हम यज्ञ में जिस पदार्थ की आहुति देते हैं वही हमें उसके फल के रूप में मिलता है यथा- सुगन्धित द्रव्य डालने पर सुगन्धित वायु, पुष्टिकारक पदार्थ डालने पर पुष्टिकारक वातावरण, मिर्च आदि पदार्थ डालने पर तदनुरूप फल। ठीक इसीप्रकार जब हम जीवन रूप अग्निहोत्र में क्रोध आदि की आहुति देते हैं तो परिणाम भी अनिष्ट ही आता है। क्रोध कर व्यक्ति अपने में आग्नेय तत्त्व की प्रधानता कर लेता है, जिससे उसके पित्त के रोग बढ़ने लगते हैं, उसकी स्मृति कमजोर होती जाती है, उसमें निराशा आती जाती है, पुन: व्यक्ति कभी-कभी आत्महत्या तक पहुँच जाता है। क्रोध आदि आसुरी शक्ति की जीवन रूपी यज्ञ में आहुति देने पर परिणाम भी तो आसुरी ही आने थे। जिस प्रकार आयुर्वेद में कुछ ऐसी औषधियों के नाम गिनाए हैं जो सम्पर्क मात्र से अपना प्रभाव डालने लगती हैं उसी प्रकार क्रोधी व्यक्ति के सम्पर्क में आने मात्र से सामान्य मनुष्य के चित्त में भी विकार आने लगता है। अत: हमें धार्मिक, विद्वानों, सज्जनों का ही संग करना चाहिए।

यान्वो नरो देवयन्तो निमिम्युर्वनस्पते स्वधितिर्वा ततक्ष।
ते देवास: स्वरवस्तस्थिवांस: प्रजावदस्मे दिधिषन्तु रत्नम्।।

- ऋ. ३/८/६

की व्याख्या में स्वयं महर्षि स्वामी दयानन्द सत्संग पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि- ''हे मनुष्यो! जिनके सङ्ग से अन्य सभ्य विद्वान् हो उन्हीं का सङ्ग तुम भी करो। जिनके समागम से दुर्व्यसन बढ़े उनको सब लोग त्याग देवें।''

अपने प्रवचन क्रम में **स्वामी ध्रुवदेव जी** ने बताया कि परमेश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' ही है। जैसे किसी स्थान विशेष के लिए यात्रा करने से पहले उसकी तैयारी की जाती है, यात्रा-टिकट लिया जाता है, अपना सारा सामान समेटा जाता है, ठीक समय पर रेलगाड़ी या वाहन के प्रस्थान वाले स्थान में पहुँचा जाता है उसीप्रकार उपासना करने के लिए भी पहले से ही तैयारी करनी पड़ती है। ऐसा करने पर उपासना ठीक प्रकार से सम्पन्न होती है। यदि हम अपने व्यक्तिगत वाहन से कहीं जाना चाहते हैं तो मार्ग का ज्ञान होना जिसप्रकार आवश्यक होता है उसीप्रकार उपासना की ठीक विधि का भी सम्यक् ज्ञान होना चाहिए। किसी रास्ते विशेष पर जब व्यक्ति कई बार आता-जाता है तो उसे उस मार्ग की बाधाओं यथा- कहाँ रास्ते में गड्ढा है, कहाँ तीखा मोड़ है, का अच्छी प्रकार ज्ञान हो जाता है और एक अच्छा चालक सावधानीपूर्वक चलकर हानि से बच जाता है ठीक उसीप्रकार एक जागरूक साधक भी साधना पथ की बाधाओं, सम्भावित चित्त-विक्षेपों के प्रति जागरूक रहकर सम्यग्तया अपनी उपासना सम्पादित करता है।

डॉ. रमेश मुनि जी ने 'जीवन में सन्तुष्टि' विषय पर अपने विचार रखें। आपने बताया कि आज व्यक्ति की

अधिकांश गतिविधियाँ लौकिक सन्तुष्टि के लिए ही हो गई हैं। व्यक्ति सन्तुष्टि के लिए जड़ पदार्थों की ओर जाता है लेकिन उसे निराशा ही हाथ लगती है। क्योंकि कितना ही अच्छे से अच्छा पदार्थ क्यों न हो, एक सीमा के बाद वह भी दु:खदायी हो जाता है। आपने बताया कि इन पदार्थों में जो सुख की अनुभूति होती है वह सतो गुण के कारण है और चूँकि समस्त पदार्थ तीनों गुणों सत्व, रजस् व तमस् से मिलकर बने हैं तो उनमें सत्व गुण के साथ रजो व तमो गुण भी है अत: जहाँ सतो गुण से व्यक्ति सुख की अनुभूति करता है तो रजो व तमो गुण के कारण दु:ख की अनुभूति भी अवश्य ही करेगा। प्रात: व्यक्ति इन सुखों के पीछे भागता-भागता अपना नैतिक पतन करता है। ईश्वर से न डरकर व्यक्ति संसार से डरता है, लेकिन विवेकी संसार भर के लोगों से डरने की अपेक्षा ईश्वर से डरता है और उसकी आज्ञा पालन में पुरुषार्थ कर सन्तुष्टि को प्राप्त करता है।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **ब्र. गौतम जी** ने **'यो जागार: तं ऋच: कामयन्ते'** की व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि जो मनुष्य जीवन में जागते हुए अपने कर्त्तव्य-कर्मों का पालन करता है, उसी पुरुषार्थी की वेद-ऋचाएँ कामना करती हैं अर्थात् उस पुरुषार्थी को ही अपना स्वरूप स्पष्ट करती हैं। यहाँ जागने का अर्थ है अज्ञान से व्यवहारिक रूप से मुक्ति तथा अपने कर्त्तव्य कर्मों का ठीक से पालन करना। सभी के प्रति हमारे जो कर्त्तव्य है उस कर्त्तव्य को ठीक प्रकार से वहन करते हुए अपने अज्ञान को दूर करना। सभी दु:खों का कारण अज्ञान है अर्थात् वस्तुओं का, पदार्थों का, सम्बन्धों का यथार्थ ज्ञान न होना, अगर मान लो ज्ञान हो भी जाए तो उसका व्यवहारिक पक्ष हम जीवन में नहीं घटा पाते हैं और हम शास्त्रज्ञ और वेदज्ञ होते हुए भी दु:खी होते रहते हैं क्योंकि हमारी विद्या का व्यवहारिक पक्ष मजबूत नहीं है। महाभाष्यकार महर्षि पतञ्जलि कहते हैं कि-

चतुर्भि: प्रकारै: विद्योपयुक्ता भवति आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेनेति।

यहाँ वेद मनुष्यों को जागरूक होने का आदेश दे रहा है, इसका सम्बन्ध हमारे व्यवहार से है क्योंकि अगर हमारा व्यावहारिक पक्ष ठीक है तो हम कुछ न जानते हुए भी बहुत कुछ जानते हैं और उस वेद के प्रिय बनकर उसकी आज्ञानुसार चलकर अपने जीवन को सही दिशा में ले जा सकते हैं।

२. संस्कृत सम्भाषण शिविर- संस्कृत भाषा हमारी लोकभाषा बने, इस उद्देश्य से परोपकारिणी सभा अपने प्रचारक उपाध्याय **श्री भैरूलाल जी** के माध्यम से संस्कृत शिविर लगवाती रहती है। इसी क्रम में २० से ३१ जुलाई २०१४ के मध्य पुष्कर (अजमेर) स्थित राजकीय संस्कृत उच्च प्राथमिक विद्यालय में संस्कृत शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग ५० विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अगस्त माह में दिनांक ७ से २५ के मध्य बिहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर जिले के डॉ. राम जी मेहता आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में शिविर लगाया गया। इसमें लगभग २५ विद्यार्थियों तथा १५ प्राध्यापकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर के समापन समारोह में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह तथा अध्यक्ष डॉ. सतीशचन्द्र झा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इति।।

चलिए गुंजोटी
यह धरती है बलिदान की

हैदराबाद दक्षिण में गुंजोटी कस्बा में आर्यवीर वेदप्रकाश ने सबसे पहला बलिदान दिया, फिर तो बलिदान की अखण्ड परम्परा दक्षिण में चल पड़ी। परोपकारिणी सभा ऋषि मेला पर इस अखण्ड प्रचण्ड यज्ञाग्नि के ७६ वर्ष पूरे होने का ऋषि मेला पर महापर्व मनायेगी।

२४ से २६ नवम्बर २०१४ को **परोपकारिणी सभा तथा महाराष्ट्र सभा** के मार्गदर्शन में प्रथम बलिदानी वेदप्रकाश के जन्म स्थान गुंजोटी में यह पर्व सोत्साह मनाया जायेगा। आर्यो! श्रद्धा से भरपूर हृदय लेकर गुंजोटी पहुँचो। याद रखो।

यह धरती है बलिदान की

गुंजोटी ने पं. प्रियदत्त जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी, श्री शिवमुनि जी, श्री विज्ञानमुनि जी, पं. रामचन्द्र जी सरीखे अनेक रत्न दिये हैं। इन तिथियों पर देश के सब भागों के आर्यजन गुंजोटी अवश्य पहुँचे। **- राजेन्द्र जिज्ञासु**

आर्यजगत् के समाचार

१. आवश्यकता- श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर, जि. जालन्धर, पंजाब में संस्कृत व्याकरण, वेद एवं दर्शन के अध्यापन हेतु आवासीय शिक्षकों के लिए प्रस्ताव आमन्त्रित हैं। ऐसे व्यक्ति जो विद्यार्थियों के लिए जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर प्रेरणा दे सकें तथा ब्रह्मचारियों के व्यक्तित्व निर्माण में रुचि रखते हों, को अधिमान दिया जाएगा।

प्रार्थी अपने शैक्षिक विवरण के साथ अपना चलभाष भी लिखकर भेजे। मानदेय मान्यता अनुरूप तथा आवास एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी।

सम्पर्क- ध्रुव कुमार मित्तल, प्रधान- ०९८८८७६४३११, ०१८१-२७८२२५२

२. वार्षिकोत्सव आमन्त्रण- आर्यसमाज जड़ौदा पाण्डा, सहारनपुर, उ.प्र. का ११वाँ वार्षिकोत्सव दि. १७ से १९ अक्टूबर २०१४ को सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें आर्यजगत् के विद्वान्, ख्याति प्राप्त भजनोपदेशक सम्मिलित होंगे।

३. शिविर सम्पन्न- ४ सितम्बर २०१४ को वैदिक वीरांगना दल, मालवीय नगर, जयपुर, राज. की ओर से राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ, लंगर के बालाजी, गणगौरी बाजार, जयपुर में नेत्रहीन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें विद्यालय के बच्चों ने भजन, गीत आदि प्रस्तुत किए तथा संस्था की सचिव श्रीमती दुर्गा शर्मा ने बच्चों को निराशा से उभरने की जानकारी दी। संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्री अनामिका शर्मा ने उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

४. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज सुमेरपुर, जि. पाली, राज. का ३८वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दि. १८ से २४ अगस्त २०१४ तक हुआ। जिसमें प्रतिदिन यजुर्वेदीय यज्ञ, आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक होशंगाबाद, म.प्र. के ब्रह्मत्व में हुआ। आर्य कन्या गुरुकुल की बालिकाओं द्वारा सस्वर वेदपाठ किया गया। श्री कुलदीप आर्य भजनोपदेशक बिजनौर ने भजनों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला।

५. पारिवारिक सत्संग- आर्यसमाज जानापुर, ता. बस्वकल्याण, जि. बिदर, कर्नाटक के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्रावण मास के उपलक्ष्य में दिनांक २७ अगस्त २०१४ से प्रतिदिन लगभग ७५ परिवारों में यज्ञ/सत्संग किये गये। हर परिवार में बालक-बालिकाओं के यज्ञोपवीत संस्कार किये गये। यज्ञोपवीत का महत्त्व भी सविस्तार बतलाया गया। आर्यसमाज के विद्वान् प्रवक्ता आचार्य पं. मोहित शास्त्री आर्योपदेशक बिजनौर, उ.प्र. और रामपाल आर्य के भजन प्रवचन हुए।

६. सङ्गोष्ठी सम्पन्न- वेदवाणी-वितान प्राच्य विद्या शोध संस्थान, बैंक कॉलोनी रोड, कोलगवाँ, सतना, म.प्र. द्वारा आयोजित 'प्राच्य विद्या सङ्गोष्ठी' का द्विदिवसीय सत्र सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सङ्गोष्ठी का विषय 'पतञ्जलि के ग्रन्थों में प्रतिबिम्बित विन्ध्य की दशा और दिशा' था।

७. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज अकोला, महाराष्ट्र द्वारा श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी का समारोह श्रावण माह में बड़े उल्लासपूर्वक तरीके से मनाया गया। इस समारोह के प्रमुख विद्वान् अतिथि आचार्य भद्रकाम वर्णी, दिल्ली तथा पं. कर्मवीर शास्त्री भजनोपदेशक लुधियाना थे, जिन्होंने इस समारोह को ज्ञानमय, मधुमय तथा मंगलमय बना दिया।

८. जन्माष्टमी समारोह सम्पन्न- आर्यसमाज सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली का ३७वाँ वार्षिकोत्सव एवं योगीराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व १७ अगस्त २०१४ को बड़े धूमधाम एवं उत्साह से सम्पन्न हुआ। जिसमें वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य श्याम जी ने अपने प्रवचनों से लाभान्वित किया।

९. वेद प्रचार सम्पन्न- १० अगस्त २०१४ से आर्यसमाज यमलार्जुनपुर, कैसरगंज, बहराइच, उ.प्र. के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व से कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमें दूर दराज के गाँवों में यज्ञ करवाया, महर्षि दयानन्द के सन्देश प्रवचन के माध्यम से पहुँचाया गया।

१०. जन्मोत्सव मनाया- आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार, लुधियाना में दि. १ जून २०१४ को आर्यसमाज के यशस्वी, कुशल, कर्मठ, प्रधान श्री आत्मप्रकाश जी का ७५वाँ जन्म दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज के उपप्रधान श्री देवपाल आर्य ने श्री आत्मप्रकाश जी के दीर्घ जीवन की प्रभु से कामना की

एवं श्री आत्मप्रकाश जी के कार्य कुशलता की प्रशंसा की, आर्यसमाज के मन्त्री श्री महेन्द्रपाल विग ने श्री आत्मप्रकाश जी को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर उनके मंगलमय जीवन की कामना की।

११. सम्मानित- सामाजिक एवं औद्योगिक संस्था 'देव विमल हर्बल हैरिटेज एण्ड एजुकेशनल सोसायटी' देहरादून की ओर से एक भव्य अलंकरण समारोह में दिनांक १४ सितम्बर २०१४ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' के सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ. सुरेन्द्र कुमार को यह सम्मान वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य के लेखन एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने के फलस्वरूप दिया गया। उल्लेखनीय है कि वर्ष में उत्तराखण्ड की ओर से डॉ. सुरेन्द्र कुमार को यह दूसरा सम्मान प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व इन्हें 'ऑल इण्डिया कांन्फ्रेन्स ऑफ इंटलेक्च्वल सोसायटी, दिल्ली' की ओर से 'उत्तराखण्ड रत्न' अलंकरण से सम्मानित किया गया था।

१२. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज चेम्बूर, मुम्बई का वेद प्रचार सप्ताह १० से १५ अगस्त २०१४ तक बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री रहे। पं. ईश्वर मित्र शास्त्री द्वारा संचालित कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि को चला। पं. नरेन्द्र वेदालंकार एवं पं. राजदेव शास्त्री ने वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ किया। भजनीक घनश्याम प्रेमी तथा उनके सुपुत्र भूपेन्द्र प्रेमी ने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

वैवाहिक

१३. नाम-नवीन सैनी, जन्म-७/१०/१९८८, योग्यता एम.बी.ए., कार्य-डिप्टी मैनेजर, गुड़गाँव, हरि.

सम्पर्क- ०९९१०१०८३१०

चुनाव समाचार

१४. आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद के चुनाव में **प्रधान**- श्री श्रद्धानन्द शर्मा, गाजियाबाद, **मन्त्री**- श्री ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य, इकला सादतनगर, **कोषाध्यक्ष**- श्री सुरेन्द्रपालसिंह आर्य, मुरादनगर को चुना गया।

१५. आर्य समाज मन्दिर, सेक्टर-६, करनाल, हरि. के चुनाव में **प्रधान**- श्री ओ.पी. सचदेवा, **मन्त्री**- श्री वेदप्रकाश आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री राजपाल आर्य को चुना गया।

१६. आर्य समाज जनता नगर, चाँदखेड़ा, अहमदाबाद के चुनाव में **प्रधान**- श्री जगदीश तनेजा, **मन्त्री**- श्री हरिशरण सारस्वत, **कोषाध्यक्ष**- श्री वेदप्रकाश अरोड़ा को चुना गया।

१७. आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान**- श्री रविदेव गुप्ता, **मन्त्री**- श्री एस.के. शर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री संजय खण्डेलवाल को चुना गया।

१८. महिला आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती सरोज कौड़ा, **मन्त्राणी**- श्रीमती अंजू लखेरा, **कोषाध्यक्षा**- श्रीमती नीलम गुप्ता को चुना गया।

१९. आर्य समाज जानापुर, ता. बसवकल्याण, जि. बिदर, कर्नाटक के चुनाव में **प्रधान**- श्री विलासराव कराले, **मन्त्री**- श्री विजय कुमार जगताप, **कोषाध्यक्ष**- श्री तातेराव जगताप को चुना गया।

२०. आर्य समाज सीताफल मण्डी, सिकिन्द्राबाद, तेलंगाणा के चुनाव में **प्रधान**- श्री सी. येल्लय्या, **मन्त्री**- श्री डि. नरसय्या, **कोषाध्यक्ष**- श्री आर. चन्द्रकान्त को चुना गया।

शोक समाचार

२१. ३ अगस्त २०१४ को आर्यसमाज यमलार्जुनपुर के लेखा निरीक्षक श्री लल्लूप्रसाद आर्य (पूर्व प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय) का निधन हो गया। वे ७६ वर्ष के थे, सच्चे समाजसेवी एवं आर्यनेता थे। उनके निधन से आर्यसमाज यमलार्जुनपुर की अपूरणीय क्षति हुई है। उन्होंने अपने जीवनकाल में दो विधर्मी हुए लोगों को शुद्ध करा कर वैदिक धर्म में दीक्षित कराया। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न की गई।

प्रतिक्रिया

महोदय, सादर नमस्ते, आपके सम्पादकीय पढ़ कर गद्‌गद् हो जाते हैं। एक विवेकी आदमी दुनिया को कितना लाभ पहुँचाता है, कितना मार्गदर्शन करके सीधे रास्ते पर दुनिया को रखता है, उसका उदाहरण आप हैं। आजकी अपेक्षा काम करने में दिन रात लगे हैं। आपको धन्यवाद। आपके टीम को धन्यवाद।

- ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी, परली वैजनाथ

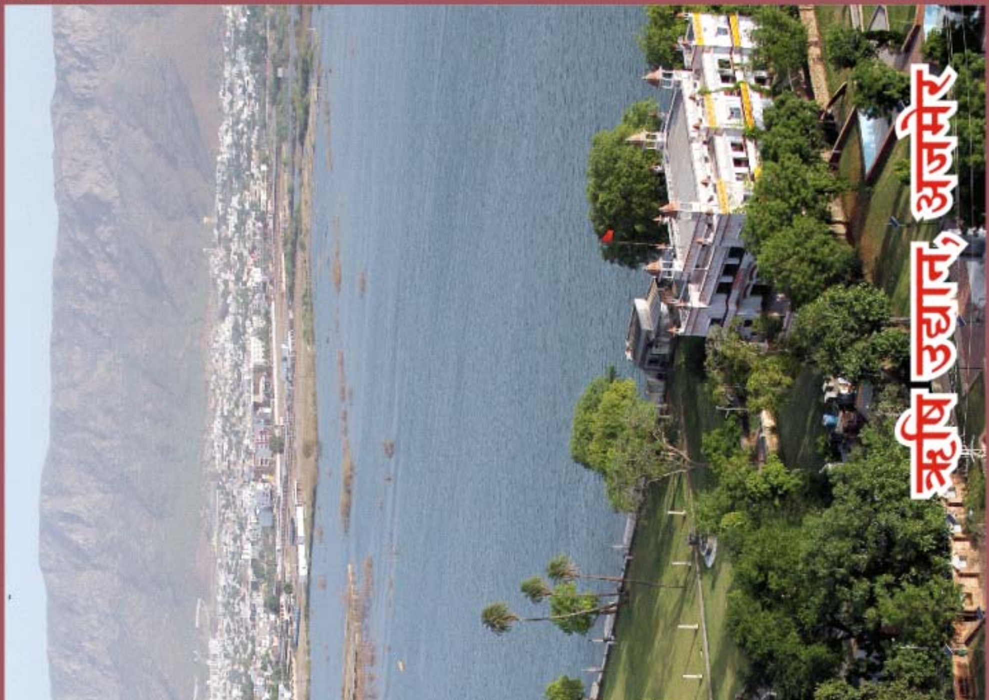
ऋषि उद्यान, अजमेर

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक   प्रेषण : ३० सितम्बर, २०१४   ३९५९/५९

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में

१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ३१ अक्टूबर, १ व २ नवम्बर २०१४

सभी आर्यजनों को सादर आमन्त्रण है।

विशेष आकर्षण : ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेदगोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता, विद्वानों का सम्मान, ब्रह्मचारियों द्वारा लघु नाटिका

ऋषि मेला

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें और महर्षि के स्वप्न को साकार करें।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ MITTAL 9829797513